वर्ष 33 अंक : 2 15.4.2010 गुरुवार (मार्च–अप्रैल) शुल्क– प्रति अंक : 10.00 रु, वार्षिक : 50.00 रु.

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

योगी परिवार स्नेहमिलन

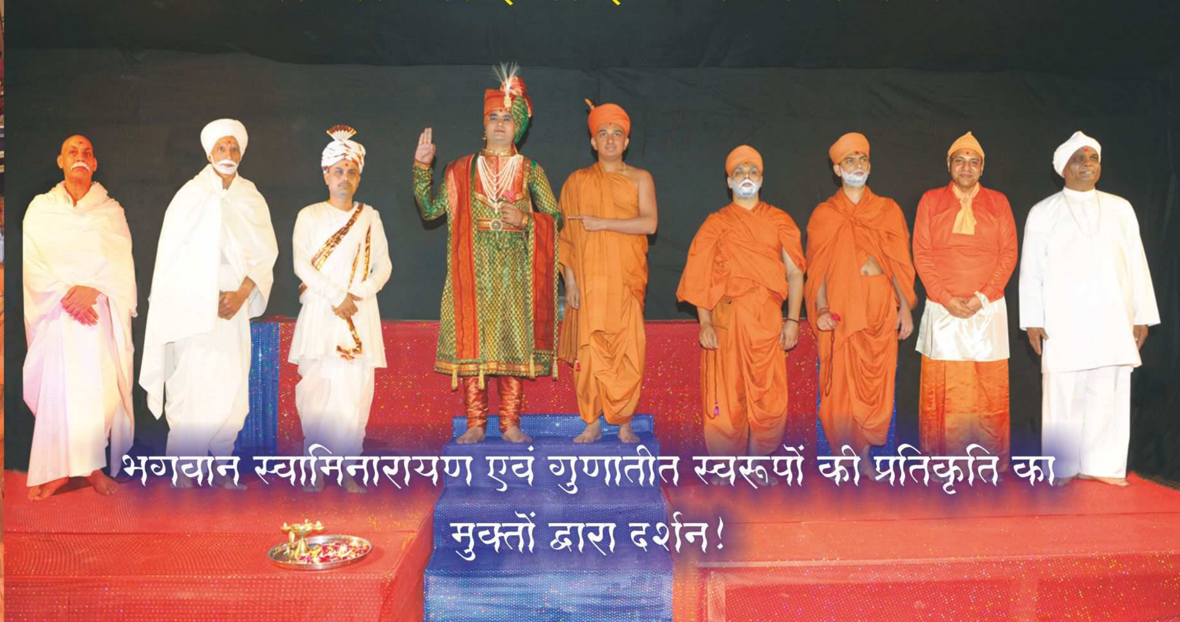
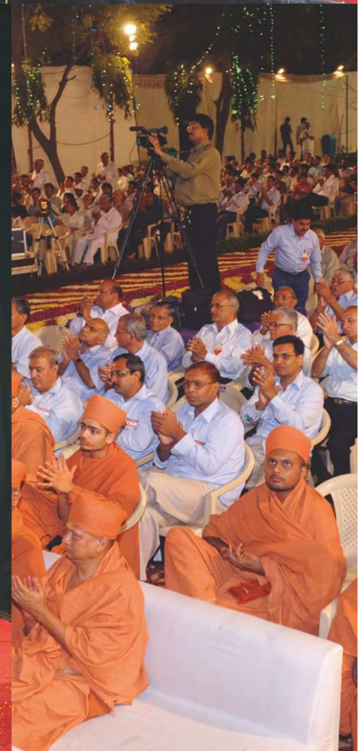

भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों की प्रतिकृति का
मुक्तों द्वारा दर्शन!

फागुन में आप हो प्रगटे, रंग श्रीजी का लगाने।
योगीजी और काकाजी के रंग में सब रंग डाले...

फागुन में प्रगटे हम सब के प्यारे प.पू. गुरुजी की प्रागट्य तिथि अबकी बार **१५ फरवरी** को आई, जिसे स्थानीय मुक्तों ने एकत्रित होकर भक्तिपूर्ण हृदय से मनाया। तत्पश्चात् **१ मार्च** – धुलेन्डी के अवसर पर **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** एवं **प.पू. साहेबजी** की प्राकट्य तिथि मनाते हुए प.पू. गुरुजी की निश्रा में चंदनोत्सव मनाया गया...

और... चौथे दिन से तो **७ मार्च – प.पू. काकाजी के स्वधामगमन दिन** पर प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के निरामय स्वास्थ्य एवं दीर्घ आयु के लिए प्रार्थना करते हुए, पिछले वर्ष की भाँति प.पू. काकाजी की पुष्पसमाधि पर ४८ घंटे की परिक्रमा का आयोजन किया गया। सभी ने दो दिन और दो रात 'स्वामिनारायण' महामंत्र का सतत जाप करते हुए परिक्रमा की। भक्तों के चेहरे के भाव अत्यधिक उमंग-उत्साह से भक्तिमय थे। साथ ही साथ चारों ओर एक अनूठा दिव्य माहौल बना हुआ था। मन करता था कि बस 'पुष्प समाधि' पर बैठे ही रहें... प.पू. गुरुजी तो भक्तों को स्मृति देने दोनों दिन सुबह पौने चार बजे उठ कर 'पुष्प समाधि' पर आकर मुक्तों को दर्शन एवं बल देने बैठ जाते।

यूँ, इन्हीं दिनों से हर एक मुक्त के दिल में आगामी दिनों में होने वाले **'योगी परिवार आनंदोत्सव'** के लिए उमंग-उत्साह दिनों दिन बढ़ता जाता है। इससे भी अधिक, भीतर में प.पू. गुरुजी की जीवनशैली, उनके द्वारा किए परिश्रम, उनकी गुरुभक्ति के प्रसंग भी मानो एक चलचित्र के दृश्यों की भाँति स्मृतिपट पर अधिकार कर लेते हैं। इन्हीं स्मृतियों में लयलीन रहते हुए जीतेजी अक्षरधाम का सुख पाते हो जाएं, यही तो गुणातीत पुरुषों की मर्जी है। तो, आओ सर्वप्रथम प.पू. गुरुजी के निम्न प्रसंगों से **'गुणातीत अस्मिता'** के भिन्न-भिन्न पहलुओं के मर्म को समझ कर, उसे आत्मसात् करते हुए **१३ मार्च २०१० – 'योगी परिवार के स्नेहमिलन'** – की स्मृतियों के भागीदार होने के लिए प्रस्थान करें...

७ मार्च, १९८६ से बीते सालों में मेरा एक भी पल ऐसा नहीं गुज़रा होगा, जिसमें 'काकाजी' शामिल नहीं हों।

'प.पू. काकाजी कॉन्सियसनेस' में अखंड रहते हुए प.पू. गुरुजी की पहचान कराने के लिए उनके ही मुखारविंद से २००६ में निकला उपरोक्त कथन ही पर्याप्त है।

* आरती के पश्चात् एवं किसी भी शुभ कार्य के आरंभ में 'मंगलाचरण' के श्लोक बोले जाते हैं। प.पू. काकाजी के श्लोक में एक पंक्ति आती थी – *'जेनी **सिद्धदशा** अहो! लीन करे सुभव्य अक्षरपदे।'* प.पू. दिनकरभाई को प.पू. काकाजी के लिए 'सिद्धदशा' शब्द का प्रयोग होना पसंद नहीं आता था। सो, उन्होंने 'संतदशा' करवाया और उसके अनुसार सभी केन्द्रों में प.पू. काकाजी के श्लोक में 'सिद्धदशा' के बजाय 'संतदशा' बोला जाने लगा। परंतु, १२ जनवरी २००६ को प.पू. दिनकरभाई एवं पू. बापू दिल्ली मंदिर आए हुए थे। तब प.पू. गुरुजी ने सहज ही प.पू. काकाजी के श्लोक में आते 'संतदशा' शब्द का ज़िक्र करते हुए कहा कि इसके बजाय **'ब्राह्मीस्थिति'** करें,

तो ? तब प.पू. दिनकरभाई ने बताया कि *पू. बापू भी चाहते थे कि ये 'संतदशा' के बजाय 'ब्रह्मदशा' या ऐसा कुछ करें।* पर, गुरुजी ने सहज ही सुझाव देते हुए कहा– *'दशा' शब्द निकाल कर 'ब्राह्मीस्थिति' रखें।* और... यह सभी को भा भी गया।

सच, **किसी भी व्यावहारिक कार्य से कन्सर्न्ड सभी को साथ में लेकर काम करने की प.पू. काकाजी की जीवनशैली** को प.पू. गुरुजी ने कैसा देखा और अपनाया होगा कि प.पू. दिनकरभाई एवं पू. बापू वगैरह की सहमति से ही श्लोक में ऐसा बदलाव करवाया।

* प.पू. काकाजी हमेशा **'फिक्स्ड टाईम धुन'** पर खूब जोर देते थे। यूँ तो रोज महापूजा में और सायं करीब साढ़े सात से आठ मंदिर में प.पू. गुरुजी धुन करवाते ही हैं। लेकिन, पिछले वर्ष २३ जून से प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की स्मृति करते हुए 'फिक्स्ड टाईम धुन' करवानी शुरु की और तब से... रोज सुबह ६:५५ से ७:२० दिल्ली मंदिर में प.पू. गुरुजी की निश्रा में मंदिर का स्टाफ धुन करता है। इसके अलावा दिल्ली के स्थानीय मुक्त, अमदावाद, पंजाब, हरियाणा, मुंबई के तकरीबन सभी मुक्त इसी समय अपने-अपने घर पर धुन करने बैठ जाते हैं।

प.पू. गुरुजी ने इस बारे में बताया भी कि जो भी मुक्त अपने-अपने घर पर बैठ कर धुन करेंगे, उनकी धुन भी यहाँ मंदिर में होती धुन के साथ ही दर्ज हो जाएगी। साथ ही समझाया– मानो हमारे घर का कोई व्यक्ति बाहर गया हो और वह कह कर जाए कि वह फलां टाईम पर हमें रोज फोन करेगा, तो हम कितने ही व्यस्त होंगे या कहीं बाहर भी गए होंगे, पर उस समय फोन के पास मौजूद रहेंगे कि अभी फोन आएगा। इसी प्रकार रोजाना हम यदि एक 'फिक्स्ड समय' पर भजन करेंगे, तो भगवान भी राह देख कर बैठे होते हैं कि अभी मुझे इसका कॉल आएगा। इस बात ने संबंध वाले मुक्तों को तो खूब स्पर्श किया ही है, साथ ही, अन्य मुक्त–जो सिर्फ सद्भावना से आते हैं, उन्हें भी खूब अपीलिंग लगती है।

इसी प्रकार हाल ही में **२४ मार्च – रामनौमी** के शुभ दिन, प.पू. काकाजी की मर्जी के अनुसार, रात्रि को बिस्तर पर लेटने से पहले **७ मिनिट 'प्रायश्चित् रूप प्रार्थना'** करके ही सोने का नियम देकर **प्रभु से मानो हमारा पूरा दिन सिक्यॉर करवा लिया!**

* १९८६ की ७ मार्च को ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने शरीर छोड़ा। तब **प.भ. मनसुखभाई (डोम्बीवली)** की जीप में उनकी पार्थिव देह को मुंबई से लेकर सभी केन्द्रों में दर्शन करवाते हुए 'ब्रह्मज्योति' लाया गया था।

उस समय हरिधाम के प्रांगण में जब प.पू. गुरुजी ने यह दर्शन किया, तब से ही उनके मन में था कि यह प्रसादी की जीप तो हमें अपने पास रखनी है और... प.पू. काकाजी ने तो उन्हें आशीर्वाद दिया ही है कि *तुम्हारे संकल्प में अमोघ बल है।* सो, वह शुभ घड़ी भी आई, जब पिछले वर्ष २६ अक्तुबर को प.पू. गुरुजी प्रसादी की वह जीप प.भ. मनसुखभाई से लेने हरिद्वार गए। प.पू. गुरुजी ने प.भ. मनसुखभाई को अपनी भावना बताते हुए कहा –

यह आपके पास रहेगी, तो केवल आप और थोड़े ही मुक्त इसका दर्शन करेंगे; जबकि दिल्ली मंदिर में हम इसे रखेंगे, तो गुणातीत समाज के अधिकतर मुक्त इसका दर्शन करेंगे और उस पुण्य के आप भागीदार बनेंगे।

सच, प.पू. गुरुजी की ऐसी सोच में प.पू. काकाजी महाराज या ऐसे गुणातीत स्वरूपों का– उनकी प्रासादिक वस्तुओं का कैसा माहात्म्य है ? साथ ही साथ **ऐसे छुपे पुण्य से अनजान मुक्तों को पुण्य कमाने की अद्‌भुत सूझ देकर धन्य करने की कैसी उच्च व उदार भावना!**

* प.पू. गुरुजी की हर एक क्रिया-चरित्र को निहारें, तो वह प.पू. काकाजी की स्मृति से भरपूर ही होगा। पिछले वर्ष दीवाली के दिनों में **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** ने प.पू. गुरुजी को चाँदी का नोट भेंट स्वरूप दिया, जिस पर भारत सरकार के हज़ार के नोट का ड़िजाईन अंकित था। यह देख कर तुरंत ही प.पू. गुरुजी को विचार आया कि प.पू. काकाजी की शताब्दी के उद्‌घोष निमित्त होने वाले **'मैत्री मिलन महोत्सव'** की एक चिरंजीव स्मृति के रूप में क्यों न प.पू. काकाजी की मूर्ति और उनके द्वारा दिए सूत्रों को अंकित करके ऐसा 'सिल्वर मॉमेन्टो' बनवाया जाए? इसके पीछे उनकी भावना यही कि सभी भक्तों को महोत्सव की स्मृति तो रहेगी ही; साथ ही साथ, जैसे कि कहा जाता है – *'तेरी तो चाँदी हो गई!'* सो, ऐसे गुणातीत स्वरूप मिलने के बाद हम सभी के जीवन में भी चाँदी ही चाँदी हो गई है – यह संदेश भी मिले!

और... दीवाली के बाद तो प.पू. गुरुजी पंजाब, हरियाणा, यू.पी. जहाँ भी विचरण में गए, वहाँ हरिभक्तों – भाभियों के पास से उन्होंने **पुरानी चाँदी** इकट्‌ठी की और अमदावाद, मुंबई एवं दिल्ली में भी सभी जगह **पुरानी चाँदी** भेजने के लिए कहलवा दिया। कइयों ने तो कहा भी कि हम कॅश दे दें या नई चाँदी दे दें। परंतु, प.पू. गुरुजी ने तो **टूटी-फूटी पुरानी चाँदी**, जो कि भक्तों के घरों में कभी इस्तेमाल ही नहीं होती हो, वो ही माँगी। यूँ किसी एक पर लोड न डाल कर, सबकी सेवा ग्रहण की। कैसी प्रॅक्टीकल एप्रोच कही जाए! प.पू. गुरुजी ने ऐसे जेस्चर से एक तो सभी मुक्तों को प.पू. काकाजी की स्मृति में गरकाव कर दिया और साथ ही इस अद्‌भुत सेवा से भक्तों को निहाल भी कर दिया।

* प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज एवं प.पू. काकाजी का कैसा सेवन किया होगा कि उन्होंने अपने जीवन में संबंध वालों की महिमा की दृढ़ता न केवल रखी है, वरन् समय-समय पर अपने वर्तन द्वारा सहज दर्शाई भी है। वे अकसर कहते हैं–

'मैं तो मानता हूँ – मेरा जन्म ही सत्संग में हुआ है।'

और... हम देखते हैं कि दिल्ली आए उन्हें भले ही चालीस वर्ष बीत गए हैं, लेकिन वे साधु हुए तब के उनके साथ के पुराने संतों एवं साथियों से उनकी आत्मीयता खूब बनी रही है।

दिसंबर में **पू. नंदगुरुस्वामी** को हुई ब्लड कैंसर की बीमारी के बारे में सुन कर प.पू. गुरुजी इतने बैचेन हो गए थे कि मैं वहाँ कब उन्हें देखने के लिए पहुँच जाऊँ? यहाँ तक कि फोन पर उनके बारे में बात करते हुए भी उनका गला भर आता। फिर अमदावाद पहुँच कर जब उनसे मिले, तब उन्हें शांति हुई।

इसी प्रकार हाल ही में प. पू. गुरुजी के प्राकट्‌य दिन पर कंथारिया से पू. विज्ञानस्वामी एवं अन्य संत दिल्ली आने वाले थे। परंतु **पू. धरमस्वामी** को अचानक हार्ट की प्रॉब्लेम आई और उन्हें बायपास सर्जरी करवानी पड़ी। दूसरी ओर–**पू. प्रफुल्लभाई** (ब्रह्मज्योति) का हीप का ऑपरेशन हुआ। सो, उत्सव में बाहर से आए मेहमानों की विदाई होने के बाद

तुरंत १८ मार्च को प.पू. गुरुजी ने अमदावाद जाने का प्रोग्राम बनाया, ताकि वे इन दोनों की तबियत देख आएं। पू. धरमस्वामी को याद करते हुए प.पू. गुरुजी बार-बार यही कहते कि–

प.पू. काकाजी की आज्ञा से १९६१ में पहली बार जो हम दिल्ली आए थे, उस ग्रुप में पू. धरमस्वामी साथ थे।

यह बात करते हुए प.पू. गुरुजी के मुख के भाव से साफ झलकता था कि भीतर से वे खूब भावुक हो गए हैं।

यूँ तो गुणातीत ज्ञान में कहा जाता है कि भावातीत होना है, परंतु मुक्तों के प्रति यूँ भावुक हो जाना तो भक्ति कही जाए, ऐसा प.पू. गुरुजी अपने वर्तन से एहसास करवाते हैं।

प.पू. गुरुजी को मुक्तों से दिल की सच्चाई से आत्मीयता है। ऐसा एक प्रसंग भी अभी-अभी बन गया। प.पू. गुरुजी अमदावाद पहुँचे कि उन्हें खबर मिली कि **पू. इलेशभाई** को हार्ट में कुछ तकलीफ हो रही है और... २० मार्च को उनकी एनज्योग्राफी है। उनके लिए भी प्रार्थना-भजन करने का मौका प.पू. गुरुजी को वहीं मिल गया। प.पू. गुरुजी 'प्रभुकृपा' में दर्शन के लिए गए और सामूहिक धुन करते हुए बोले–

'आपणे धुन करीए के इलेश लीले तोरणे पाछो आवे.'

अर्थात्– तकलीफ की कोई बात न निकले। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज हमेशा कहते–

'प्रार्थना में अमोघ बल होता है।'

सो, सभी के भजन-प्रार्थना के फलस्वरूप पू. इलेशभाई की एनज्योग्राफी की रिपोर्ट नॉर्मल आई और... यह रिपोर्ट जानने के बाद ही प.पू. गुरुजी ने दिल्ली लौटने की अपनी टिकिट करवाई।

* अब की बार प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के अमृत पर्व के उद्घोष निमित्त २० फरवरी के उत्सव में प.पू. गुरुजी सांकरदा गए थे। वहाँ स्टेज पर विराजमान पाँचों स्वरूपों को विशिष्ट हार पहनाए थे, जो आपस में एक लम्बी लड़ी से एक साथ जुड़े हुए थे। उस समय प.पू. स्वामिजी एवं प.पू. गुरुजी के सोफे के बीच गॅप ज्यादा होने के कारण उन हारों को जोड़ने वाली लड़ी थोड़ी-सी खिंच रही थी। सो, जब तक स्वरूपों ने वह हार पहने रखा और फॉटोग्राफर्स मूर्ति खींचते रहे, तब तक प.पू. स्वामिजी की ओर थोड़े झुके रह कर ही प.पू. गुरुजी बैठे रहे, ताकि उस लड़ी के खिंच जाने से प.पू. स्वामिजी को कोई तकलीफ न हो।

भक्तिपूर्ण हृदय के अलावा ऐसा विचार आना और तुरंत ही बिना किसी प्रदर्शन के वह कर लेना संभव ही नहीं है।

* मई २००९ महीने की 'भगवत् कृपा' का मॅटर प्रेस में भिजवाने के लिए फाईनल हो रहा था। सो, १८ मई की रात को ग्यारह बजे उसकी फाईनल करेक्शन्स लगा कर मॅटर अक्षरज्योति से मंदिर भेज दिया गया था। सुबह पौने सात बजे बहनें जब मंदिर गईं, तो प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी ने बताया कि आधी रात से– २:१५ बजे से लेकर सुबह ४:०० बजे तक – प.पू. गुरुजी ने पत्रिका का मॅटर चॅक किया है और... पू. अभिषेक से कॉफी बनवाई व साथ में चिड़वा खाया। यह सुन कर सहज ही प.पू. काकाजी की स्मृति तो हुई ही कि वे भी यूँ आधी रात को जाग कर,

कुछ न कुछ लिखने या पढ़ने का काम करते, फिर चाय पीते और कुछ नाश्ता ग्रहण करते; पर, साथ ही यह भी एहसास हुआ कि प.पू. गुरुजी अपने वर्तन से भक्ति अदा करने की कैसी सूझ देते हैं!

* **'सतत मंत्रजाप', यानि 'धुन' हर समस्या को हल करेगी ही** – ऐसा सूत्र लिखवा कर प.पू. गुरुजी ने अपने सोफे के ऊपर लगवाया है। **पू. मल्कानी अंकल** ने वह पढ़ कर कहा – *'यह सूत्र बहुत अच्छा है, मेरे लिए भी ऐसा बनवा देना।'* उसी दिन शाम तक प.पू. गुरुजी ने वह बनवा कर अंकल को भिजवा दिया! देख कर अंकल खूब हैरान हो गए कि *आज ही तो मैंने गुरुजी को कहा और इतनी जल्दी गुरुजी ने वह बनवा कर भिजवा भी दिया!*

  प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं –

  कोई कुछ मांगे - कहे, तब यूँ कहने के बजाय कि 'कर दूँगा', हम तुरंत ही वह कर दें, तो उसके भीतर की मूर्ति हमें मिल जाती है।

  सच, **भक्तों के भीतर की मूर्ति लूटना तो कोई गुरुजी से सीखे!**

* बाहर से कोई भी हरिभक्त मंदिर आता है और यदि उसकी सेवा में गाड़ी रखनी होती है, तो प.पू. गुरुजी सेवक से पूछते हैं –

  गाड़ी के कवर वगैरह साफ - सुथरे हैं न?

  साथ ही आग्रह रखते हैं कि हमेशा हर एक के लिए अच्छी ही व्यवस्था करके देना। इससे भी अधिक, उदाहरण देते हुए समझाते हैं –

  हम कहीं जाते हैं और हमें वहाँ एकदम साफ-सुथरा बिस्तर वगैरह मिलता है, तो हम कितने खुश हो जाते हैं?

  हम सेवा करें, वो सामने वाले को राजी करने के लिए होनी चाहिए। बस, हमने सेवा निपटा ली, इतना ही नहीं। यहाँ तक कि – नक्षु को कलरफुल रॅपर्स वाली टॉफियाँ पसंद हैं... तो उसे हम ऐसी टॉफियाँ दें।

  नक्षु जितने का भी वे ऐसा ध्यान रखते हैं, तो औरों की तो बात ही क्या?

  मर्म यह है कि भक्तों की पसंद समझ कर उसके मुताबिक वर्तेंगे, तो सत्पुरुष की प्रसन्नता लूट सकते हैं।

  यूँ बातें छोटी-छोटी होती हैं, पर इनसे सत्पुरुष को लूटा जा सकता है। बाकी तो लाखों टन की 'गधामज़दूरी' ही है।

  दूसरी ओर, **हम सत्पुरुष की मर्जी के मुताबिक नहीं वर्तते, सो हमारी ही कॉन्शियन्स बाईट करती है और हमें लगता है कि वे हमसे नाराज़ हैं; बाकी, सत्पुरुष तो कभी नाराज़ होते ही नहीं हैं।**

* प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के अमृतपर्व के उद्‌घोष निमित्त सांकरदा में होने वाले उत्सव के लिए प.पू. गुरुजी तो बाय प्लेन वडोदरा जाने वाले थे। परंतु उनके साथ में जाने वाले कुछ मुक्त 'हापा जम्मुतवी' ट्रेन से जाने वाले थे। सो, १८ जनवरी की रात्रि को समय के मुताबिक १० बजे जब वे स्टेशन पहुँचे, तो पता चला कि ट्रेन आधा-पौना घंटा लेट है। लेकिन फिर तो उसके लेट होने का समय बढ़ने लगा और... ट्रेन के आने की राह देखते हुए वे मुक्त स्टेशन पर बैठे रहे। उस दिन कड़ाके की ठंड भी थी। वैसे भी, स्टेशन जैसी खुली जगह पर ठंड भी ज्यादा लगती है। सो, इधर मंदिर में बैठे प.पू. गुरुजी ने उन मुक्तों की चिंता करते हुए, रात को सेवक द्वारा स्टेशन पर उनके लिए कम्बल भेजे, ताकि स्टेशन पर वे

ठंड में ठिठुरते न रहें। कम्बल देख कर स्टेशन पर बैठे उन मुक्तों की आँखें नम हो आईं कि भला कौन हमारा इतना ध्यान रख सकता है! सच, **कैसी दयालुता और भक्तवत्सलता!!**

* दिल्ली मंदिर के आत्मीय हरिभक्त **प.भ. सिद्धार्थ मल्होत्राजी** कई वर्षों से मंदिर आते हैं। मंदिर के उत्सवों के दौरान 'सेल काऊंटर' पर अकसर उनकी सेवा निर्धारित होती है। पिछले वर्ष दीवाली के दिनों में उनका सात वर्षीय बेटा 'रक्षित' लीवर खराब हो जाने की वजह से अस्पताल में अंतिम सांसें ले रहा था। ऐसी विषम परिस्थिति में भी जबकि उनका बेटा जिंदगी और मौत से जूझ रहा था, मंदिर में उनका फोन आया कि अन्नकूट के उत्सव के लिए 'सेल काउंटर' लगाने में तकलीफ तो नहीं पड़ रही? **बुद्धि से परे की यह बात कही जाए।** 'भक्त चरितम्' में श्रीजी महाराज के समय के **देवजी भक्त** के बारे में तो पढ़ा था कि उनके इकलौते पुत्र का निधन हो गया था, तब गाँव में सब शोक मनाने न आएं, सो वह दंपति एक समझदारी से घी का घड़ा लेकर श्रीजी महाराज के पास चले गए थे। पर, यहाँ तो तादृश ही देखा कि जिसके पुत्र का अंत समय चल रहा हो और तब उस पिता को मंदिर का अनुसंधान!! ऐसे निष्ठावान मुक्तों के समाज को देख कर काकाजी कितना राजी होते होंगे? वाकई–

'दिल्ली जाओ संकल्प है बापा का,
मैं नहीं तुम्हें भेज रहा
मुक्त निष्ठावान मिल जाएंगे,
गुरुजी को ये आशीर्वाद दिया...'

ये पंक्तियाँ यहाँ चरितार्थ हैं।

* पिछले वर्ष मुंबई के प.भ. राजीव पंडयाजी की पत्नी **सौ. अंबर भाभी** का ऑप्रेशन हुआ था। उन्हीं दिनों प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के निरामय स्वास्थ्य की प्रार्थना के हेतु से ७ एवं ८ मार्च को ४८ घंटे की अखंड परिक्रमा का आयोजन किया गया था। प.पू. काकाजी की 'पुष्पसमाधि' पर परिक्रमा का कार्यक्रम चल रहा था। प.पू. गुरुजी भी वहीं विराजमान थे। अचानक ही ७ मार्च की रात को करीब साढ़े ग्यारह-बारह बजे प.पू. गुरुजी ने प.पू. दीदी को कहलवाया कि *अंबर की तबियत पूछने के लिए फोन करो।* देर रात्रि के कारण प.पू. दीदी ने हिचकते हुए फोन किया। उस समय सौ. अंबर भाभी खूब अपसॅट थीं; लेकिन प.पू. दीदी का फोन जाने से उन्हें खूब बल तो मिला ही, साथ ही ऐसा एहसास हुआ कि **हमारी फ़िक्र करने के लिए आधी रात को भी कोई बैठा है।**

ऐसे प्रसंगों से सहज ही प्रतीति होती है कि जैसे अकसर प.पू. गुरुजी कहते हैं–

भक्त की पुकार सुन कर प्रभु ही साधु को अपने वश करके वर्ता लेते हैं।

* पिछले १५ सालों से दिल्ली मंदिर का निर्माण कार्य अधूरा पड़ा है। पर... अब दिल्ली में बढ़ती गर्मी के कारण प.पू. गुरुजी ने इच्छा जाहिर की कि मंदिर के हॉल का काम अब करवाना चाहिए। पर, प.पू. गुरुजी का हमेशा आग्रह रहा है कि– ***हमें कोई कॉमर्शियल एक्टीवीटी नहीं करनी है या कोई लक्ष्य के लिए मार्किटों से पर्चियाँ कटवा कर उसका हल नहीं निकालना है। यह मंदिर हम सब का घर है और... पूरा सत्संग हमारा परिवार है। तो, जैसे अपने घर में लड़की की शादी हो और मानो आर्थिक रुप से हाथ तंग हो, तो परिवार के सब मिलजुल कर सारा भार उठा लेते हैं, ना कि***

मार्किटों में जाकर 'एक लड़की की शादी में दान-सहाय दो' करके पर्चियाँ कटवाएंगे। इसी तरह सभी भक्त अपनी गुंजाइश से थोड़ी-थोड़ी ज्यादा सेवा करके हाथ बटोरें और उन्हीं से यह सारा कार्य करवाना है। अपनों से ही यह पुण्य का कार्य करवाना है, यह पुण्य बाहर वाले क्यों ले जाएं?

इसी भावना को मद्देनज़र रखते हुए **प.भ. पप्पूजी** ने अपने आर्थिक हालात कमजोर होते हुए भी जब हैसियत से थोड़ी ज्यादा सेवा करी, तो पूछने पर उन्होंने बताया–

दो महीने पहले उन्हें महाराज ने सपने में दर्शन दिए कि ये मंदिर के काम में आप सेवा करो। गुरुजी के साथ मैं तो खड़ा हूँ ही, लेकिन इस काम में आप लोगों का सहयोग भी जरुरी है।

प.भ. पप्पूजी का यह सपना सुन कर सहज ही हरिधाम से संतों द्वारा प.पू. गुरुजी की षष्ठीपूर्ति निमित्त बनाए गुजराती भजन की पंक्तियाँ याद आई–

ज्ञानयज्ञनुं सपनुं अने काकाश्रीनो अणसार
स्वामी श्रीजी दर्शनीया दे दिल्ही दरबार
सर्वोपरि निमित्त सेवक बन्या एवा आप...

साथ ही यह भी दृढ़ हुआ कि प्रभु का कार्य तो प्रभु स्वयं करेंगे ही, पर उसमें हमें निमित्त बना कर हमें पुण्य का भागीदार बनाना चाहते हैं। और तो और, मानो हमारा कोई प्रारब्ध टालने के लिए हम से यह सेवा लेते हैं और उससे उबारना चाहते हैं। परंतु, यह हमें दिल की सच्चाई से मानना पड़ेगा और... जैसा कि प.पू. गुरुजी कहते हैं कि हम दिल की सच्चाई से मानते हैं तो प्रभु हमें अनुभव भी करवाते हैं, जिस प्रकार प.भ. पप्पूजी को महाराज ने अनुभूति करवाई। भगवान श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत तो अपनी छोटी उंगली पर उठा ही लिया था, लेकिन जिस-जिसने उसमें टेका लगाया, वे निहाल हो गए और 'भक्त' कहलाए। यूँ, एक मात्र प.पू. काकाजी को राजी कर लेने की भावना से प.पू. गुरुजी ने गुरुवर्य योगीबापा के संकल्पानुसार दिल्ली में स्वामिनारायण मंदिर के निर्माण का जो कार्य उठाया है, उसमें हम तन, मन, धन एवं आत्मा से सहभागी बनेंगे, तो हमारी कई कसर ऑटोमॅटिक टल जाएंगी और वे जो सुख हमें देना चाहते हैं उसके भोक्ता बन जाएंगे।

* १ जून २००९ को **सौ. शमा भाभी** के बेटे **आदित्य** का जन्मदिन था। सो, वे दोनों सुबह मंदिर दर्शन करने आए। आदित्य प.पू. गुरुजी के सोफे से थोड़ी दूरी पर बैठा था। सहज ही सौ. शमाभाभी को मन में विचार आया कि *आदित्य यदि गुरुजी के पैर दबाए तो?* इतने में तो गुरुजी ने आदित्य को बुलाया और कहा कि *मेरे पैर दबा दो।* इससे भी अधिक उसे बताया भी कि किस तरह दबाने हैं।

इससे स्पष्ट ख्याल आता है कि **साधु की हर एक क्रिया मुक्तों के संकल्प के मुताबिक प्रभुप्रेरित होती है–चैतन्यलक्षी होती है-प्रभु की भक्तिरुप होती है।** दूसरी ओर यह एहसास भी रहता है कि हमारे पल-पल के विचार सत्पुरुष जब पकड़ लेते हैं, तो स्वभाविक है कि हमारे हर विचार के वे साक्षी हैं ही। लेकिन, इस तथ्य को भूल कर हम से कई बार ऐसा व्यवहार हो जाता है, जो उन्हें जरुर दुःख पहुँचाता होगा...

* इसी वर्ष की २६ जनवरी को **प.भ. के.के. अग्रवालजी** की सुपुत्री **पू. डॉ. प्रतिज्ञा** ने भगवान भजने का निर्णय किया। अतः प.भ. के.के. अग्रवालजी की इच्छा थी कि प.पू. गुरुजी,

प.पू. दीदी एवं हरिभक्तों को इस निमित्त घर बुलाया जाए। सो, इस बारे में प.भ. के.के. अग्रवाल सभी को आंमत्रित करते हुए सायं मंदिर में बोले –

जैसे अभिषेक सतत आपकी ओर निगाह रख कर जी रहा है, वैसे ही यह भी चले।

तब सहज ही प.पू. गुरुजी ने कहा–

उसके लिए पल-पल मरना पड़ता है। जैसे सैनिक घर से निकलता है, तो सोच कर ही निकलता है कि मरने जा रहा हूँ। यूँ, ***जिसे अपने ध्येय की स्पष्टता हो, वही यूँ जीता है। जिसको ध्येय की स्पष्टता ही न हो, पता ही ना हो कि क्या करने आए हैं, ऐसे तो 'गोबरगणेश' की तरह बस पड़े रहें, इतना ही।***

यह बात केवल नए आने वाले के लिए नहीं है, बल्कि हर एक साधक को ध्येय की स्पष्टता के लिए टोकती रहे–जाग्रत रखे ऐसी है। पर **यह तभी होगा जब हम प.पू. गुरुजी की इस बात को सच मान कर पल-पल निगाह समक्ष रख कर चलेंगे।**

यूँ, नित्य-नवीन चरित्रों, बातों और अपने वर्तन द्वारा प.पू. गुरुजी हमें गुणातीत कुनबे की रीति-नीति सिखाते ही रहते हैं। और... अपने प्राकट्य दिन पर वे हमारे सभी केन्द्रों के मुक्तों को-स्वरूपों को आग्रहपूर्वक बुलाते हैं, जिससे कि हम इन गुणातीत स्वरूपों की बताई राह पर चलते हुए अक्षरधाम की अनुभूति करते रहें...

इसी भावना से हमें जीवन की अनमोल स्मृतियाँ देने के लिए प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं संतों और प.पू. स्वामिजी की आज्ञा से पू. कोठारीस्वामिजी सोलह संतों के साथ **११ मार्च** की सुबह दिल्ली आ गए। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी स्टेशन से सीधे मंदिर आ गए और पू. कोठारीस्वामिजी एवं सभी संत फार्म हाऊस गए। इसी प्रकार **'गुणातीत ज्योत'** से प.पू. ज्योति बहन, प.पू. जशु बहन, पू. डॉ. नीलम बहन एवं अन्य दस बहनें भी इसी दिन दिल्ली आ गईं।

दूसरे दिन **१२ मार्च की सुबह** तो ब्रह्मज्योति से **प.पू. साहेब की आज्ञा से प.पू. शांतिभाई** और कुछ मुक्त एवं **पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** करीब छप्पन मुक्तों को लेकर **'योगी परिवार स्नेहमिलन'** के लिए आ गए। मुंबई, अमदावाद, यू.पी., हरियाणा से भी मुक्त आने लगे। दोपहर तक तो फार्म हाऊस से प.पू. कोठारीस्वामिजी भी संतों को लेकर अशोकविहार मंदिर आ गए और... जैसे कि प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि हम घर-घर के सभी मिलकर आनंद करेंगे; सो **१२ मार्च की सायं** मंदिर के परिसर में एक घरेलू सभा हुई, जिसमें पू. कौशिकभाई (एरु), प.भ. लांबा साहेब, पू. गुरुजी (सांकरदा), पू. दासस्वामिजी (हरिधाम), प.भ. हेमंतभाई मर्चंट, पू. स्नेहलस्वामी (सांकरदा) ने माहात्म्य दर्शन कराया। और... सभा के अंत में प.पू. गुरुजी एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने आशिष प्रदान करते हुए साधकों को मीठी टकोर की। तत्पश्चात्, प्रसाद लेकर शिविर के इस सत्र का समापन हुआ।

अगले दिन **१३ मार्च की सुबह** प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त पू. यज्ञप्रियस्वामी ने उपस्थित स्वरूपों की निश्रा में महापूजा की। महापूजा के बाद छोटी सभा हुई और... सुरत के पियुषभाई, प.भ. वच्छराजजी (दिल्ली) एवं प.भ. पुनीत गोयलजी ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। तत्पश्चात् प्रसाद लेकर एक ओर सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर गए, तो दूसरी ओर सायं होने वाले प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की तैयारियों में स्वयंसेवक लग पड़े।

१३ मार्च की सायं की सभा का नज़ारा भी

अविस्मरणीय था। जैसे कि निमंत्रण कार्ड पर बहुत ही रहस्यमय ढंग से एक ब्रिज के स्तंभों की नींव में प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी की मूर्ति दर्शाते हुए ड़िजाईन बनाया था, उसी का बड़ा रूप **प.भ. आशिष, प.भ. पुनीत, प.भ. चेतन शर्मा व युवकों** द्वारा की गई खूब मेहनत से स्टेज पर तादृश था, जिसका तात्पर्य यही था –

काकाजी-पप्पाजी *रूपी स्तंभों पर*
'गुणातीत समाज का रॉयल स्पिरिच्युअल रोड'
खड़ा है
और
उन्हीं ***की बदौलत आध्यात्मिक राजमार्ग पर चलते हुए आज सभी केन्द्रों ने अपना-अपना अस्तित्व पाया है।***
पर, हम अपने मन की भूलभुलैया में,
इस राजमार्ग के उन आधारस्तंभों को कदापि नज़रअंदाज न करें।
और...
इसी भावना को उजागर रखने के लिए हर वर्ष प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त
'योगी परिवार के स्नेहमिलन' *के लिए हम सब यहाँ एकत्रित होते हैं।*

आवाह्न-धुन भजन से सभा की शुरुआत हुई। प्रासंगिक उद्‌बोधन की श्रृंखला में सर्वप्रथम **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** एवं **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब** ने अपना वक्तव्य प्रकट किया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त **प.पू. दीदी की प्रेरणा से प.भ. राकेशभाई** ने दो रागों को मिलाते हुए एक भजन बनाया था। प.भ. राकेशभाई का गला खराब होने के कारण **श्री दीपक कुमारजी** ने वह गाया। प.भ. दीपक कुमारजी वैसे प्रॉफेशनल गायक हैं, लेकिन उन्हें प.पू. गुरुजी के प्रति एक लगाव भी है। सो, हाँलाकि इसी दिन उनका एक 'शो' भी था, फिर भी वे यह भजन सभी को सुना कर ही गए, जिसके बोल थे –

'गुणातीत-सी छवि कमाल,
हैं चंचल नैन तुम्हारे विशाल...'

एवं साथ में जुड़ी पंक्तियाँ थीं –

'तुमसे जो भी मिला उसे ये ही लगा कि
काकाजी को देखा...'

भजन के बाद अशोकविहार क्षेत्र के पूर्व विधायक **श्री मांगेराम गर्गजी**, प.पू. काकाजी के कृपापात्र एवं हमारे पुराने जोगी लुधियाना के **प.भ. कमलदेवजी** एवं **पू. यज्ञप्रियस्वामिजी** ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं... फिर दर्शन, सेवा, समागम का सुख देने आए स्वरुपों, संतों एवं अतिथियों का हार एवं बुके अर्पण से स्वागत किया गया। साथ ही दिल्ली गुणातीत समाज के मुक्तों की ओर से **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** ने फूलों का एवं अक्षरज्योति की बहनों की ओर से **प.भ. पुरी अंकल** ने गुणातीत समाज के चार रंगों का फेन्सी हार प.पू. गुरुजी को इस भावना के साथ अर्पण किया –

प.पू. काकाजी की वाणी में कई बार सुना है कि ***'सारा बृहद् गुणातीत समाज एक।'*** *हम सभी के प्यारे प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की इस दिव्य चाहना को पकड़ कर – उनके द्वारा किए गए अथक परिश्रम की ओर निगाह रखते हुए उत्तर भारत की भूमि पर संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों की चार पंखुड़ी का नूतन गुणातीत समाज जिसे प.पू. काकाजी ने सर्जा है, उसे इस कदर सींचा है। 'एकता' की उनकी मर्जी में हम अपना सब छोड़ कर, उसमें साथ देकर यह सेवा लूट लें – ऐसी प्रार्थना!*

इसी प्रकार सभी केन्द्रों से आए संतों, मुक्तों, बहनों ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी को हार एवं भेंट अर्पण करी।

तत्पश्चात्, **पू. इलेशभाई** ने गुरुहरि पप्पाजी

का भजन ***'पप्पाजी धरा पर चिंरजीव स्वरूप हैं'*** गाकर सबको प.पू. पप्पाजी की स्मृतियों में भावविभोर कर दिया और... फिर **पू. वशीभाई** ने महिमागान किया। अशोकविहार क्षेत्र के विधायक एवं आत्मीय स्वजन **श्री हरिशंकर गुप्ताजी** ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। और... फिर **पू. शांतिभाई** ने माहात्म्य दर्शन कराते हुए **प.पू. साहेबजी** द्वारा लिखित आशीर्वाद पढ़ कर उनकी हाज़िरी का सभी को एहसास करवाया। अस्वस्थ होने के कारण प.पू. स्वामिजी नहीं आ पाए, तो उन्होंने पू. कोठारीस्वामिजी, पू. प्रेमस्वामिजी एवं पू. दासस्वामिजी के साथ १४ संतों को भेजा था। अतः प.पू. गुरुजी के सखास्वरूप **पू. प्रेमस्वामिजी** ने भी माहात्म्य दर्शन कराया।

१९८५ में जब मंदिर की शिलान्यासविधि हुई थी, तब प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. स्वामिजी की निश्रा में **श्री एच.एस. नाग साहेब** ने मुख्य यजमान के रूप में भाग लिया था। सालों के बाद अब की बार श्री नाग साहेब उसी भावना के साथ उत्सव में आए और **स्वर्णस्वर-६** भजन संग्रह की सी डी का उद्घाटन किया।

फिर... प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त **पू. इलेशभाई** ने एक और नया भजन प्रस्तुत किया– ***'संबंध संत का पाया, मुक्तों का संग पाया...'***

तत्पश्चात्, प.पू. स्वामिजी की ओर से **प.पू. कोठारीस्वामिजी** ने एवं **प.पू. अक्षरविहारी-स्वामिजी** ने आशिष वर्षा की और... **प.पू. भरतभाई** ने भी प.पू. गुरुजी द्वारा वर्षों पहले दिए मार्गदर्शन की सी डी **मार्गदर्शिका-३** का अनावरण करके सभी को अपने आशीर्वचनों से सराबोर कर दिया।

अंत में **प.पू. गुरुजी** ने अपनी आशीर्वाणी द्वारा सभी के आने पर अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए **'योगी परिवार स्नहेमिलन'** का मानो सार रख दिया और... सभा का विसर्जन करते हुए **प.भ. मल्कानी अंकल** ने आभार दर्शन कराया ही था कि तुरंत प.भ. राकेशभाई ने स्टेज पर विराजमान सभी स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों को मंच से नीचे आने की प्रार्थना की।

तकरीबन दस मिनिट के अंतराल में ही मंच की सारी व्यवस्था बदल दी गई और... सत्संग के युवकों ने ***'गुणातीत संत की परंपरा से, गुरुजी हमने पाए हैं...'*** भजन पर भावनृत्य प्रस्तुत करके उत्सव को अविस्मरणीय बना दिया। केवल चार मिनिट के इस भावनृत्य में सभी ने भगवान स्वामिनारायण, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज, अनादि महामुक्त जागास्वामी, अनादि महामुक्त अदाश्री, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की वेशभूषा में मुक्तों द्वारा इन स्वरूपों की हूबहू प्रतिकृति देखी। स्टेज का यह दृश्य सभी की चित्तपट्टी पर अपनी अमिट छाप छोड़ गया। आख़िर में तो 'मैत्री मिलन महोत्सव' निमित्त किए भांगड़े 'शताब्दी आई है काका दी...' पर अपना हर्षोल्लास प्रकट करने के लिए कई मुक्त स्टेज पर भांगड़ा करने उमड़ पड़े!

अंत में... इस स्नेहमिलन की सही अर्थ में फलश्रुति प्राप्त करने के लिए सभी स्वरूपों से प्रार्थना कि अब हम भीतर से अंतर की प्रगट मूर्ति को प्रत्यक्ष करके, उनका ही बल लेकर, इस राह पर चलते ही रहें...

(मार्च के उत्सव निमित्त हुए मुक्तों के प्रवचन एवं स्वरूपों की आशिष वर्षा का लाभ आप 'भगवत् कृपा' के आगामी अंक में ले पाएंगे।)

✡✡✡

श्रीहरि जयंती – भगवान स्वामिनारायण का धरती पर अवतरण...

गीताजी में श्लोक है –

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

अर्थात् – जब भी धर्म का लोप होता प्रतीत हुआ है, तब-तब भगवान ने मानव रूप में धरती पर अवतरण करके धर्म की पुनःस्थापना की है। यूँ, धर्म की पुनर्स्थापना करने की ऐसी श्रृंखला में लाखों वर्षों पूर्व रामनौमी के मंगलकारी दिन श्री रामचंद्रजी ने एवं करीब पाँच हज़ार वर्ष पूर्व श्रावण कृष्ण जन्माष्टमी के दिन भगवान श्री कृष्ण ने रावण और कंस जैसे असुरों का नाश करने के लिए मानव रूप में जन्म लिया...

करीब ढाई सौ वर्ष पूर्व **असुरों का नहीं, बल्कि असुरों के भीतर विद्यमान आसुरी वृत्ति का नाश** करने और **भारत की भूमि को सदैव सनाथ रखने** के लिए भगवान स्वामिनारायण ने अवध के पास छपैया गाँव में रामनौमी के मंगलकारी दिन अवतार लिया, जिसे अब की बार **२४ मार्च** को समग्र स्वामिनारायण संप्रदाय में हर्षोल्लास से मनाया गया...

और... इस बार की रामनौमी तो दिल्ली गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए चिरस्मरणीय बनी, क्योंकि इस वर्ष **प.पू. गुरुजी को त्यागाश्रम की दीक्षा लिए ५० वर्ष पूरे हुए, यानि – त्यागाश्रम की स्वर्ण जयंती**! १९६० में २३ वर्षीय युवक के रूप में प.पू. गुरुजी मुंबई से गोंडल गए और रामनौमी के दूसरे दिन गुरुवर्य योगीजी महाराज के करकमलों से पार्षदी दीक्षा ली। प.पू. बापा को प.पू. गुरुजी का पहले से ही खूब पक्ष! जिस दिन दीक्षा ली जाती है, उस दिन व्रत किया जाता है। सो, व्रत करने के लिए पूछते ही प.पू. बापा बोले – *कल रामनौमी का व्रत कर लिया है न, उसमें आ गया!*

यूँ, पढ़े-लिखे युवकों को साधु बनाने की दिव्य योजना में बापा ने प.पू. गुरुजी को प्रवेश तो दिया ही, साथ ही प.पू. काकाजी का अजोड़ संबंध दे करके उन्हें निहाल कर दिया और... प.पू. गुरुजी आज उत्तर भारत के मुक्तों के प्राणाधार बन कर उनके जीव में 'स्वामिनारायण की सर्वोपरिता' दृढ़ करवाते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को उजागर करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं।

हम अपनी सीमित व शापित बुद्धि से भगवान स्वामिनारायण के स्वरूप को या उनकी सर्वोपरिता को भला कैसे जान पाएंगे? इसीलिए कृपासाध्य प्रभु ने अपने अखंड धारक गुणातीत संतों की गोद हमें बख़्शिश दी, जिन्होंने समय-समय पर आशीर्वाद के रूप में हमारे जीव में हमें हुई प्राप्ति की महिमा भरने का भरसक प्रत्यन किया है । तो, आइए! निम्न आशीवर्चनों का मर्म समझते हुए जीव में भगवान स्वामिनारायण एवं प्रगट प्रभु की सर्वोपरिता दृढ़ करके उनकी मर्जी में जीने के लिए तत्पर हों...

आज महाराज का जन्मदिन है, तो उनके गुण गाएँ।
(वच. अंत्य ३८ में) स्वरूपनिष्ठा की जो बात समझाई गई है,
उसे समझ लें, तो अक्षरधाम में बैठने में देर नहीं लगेगी।
इसी जन्म में जिसे फ़ैसला कर लेना हो, उसके लिए यह बात है।
अक्षरधाम में जो महाराज हैं, वे ये ही हैं।
प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप का सेवन करने से महाराज की पहचान होगी।
(भगवान) भक्त की इच्छा के मुताबिक सेवा स्वीकारें, भाव (मनोरथ) पूरा करें,

सो भक्त को दिव्यानंद मिलता है।
ऐसा आनंद कराते हुए सर्वोपरि, कर्ता, साकार, प्रगट (प्रभु) सदा विराजमान हैं।

– गुरुवर्य योगीजी महाराज, १९६३
श्री हरिजयंती – कपोलवाड़ी

स्वामिश्रीजी

गुणातीत समाज की जय
मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय
ऐसे सर्वोपरि सम्राट महाराज प्रगटे! मुझे मिले! मैं उनका हुआ।
उन्होंने मुझे अपना गिना! निहाल हो गया!
अपने जैसा बनाए बिना अब वे (मुझे) छोड़ने वाले नहीं, इसकी मुझे खातिरी हुई।
इस प्राप्ति की मस्ती, गरूर, जोश, और महिमा से निरंतर अक्षरधाम की समाधि में रह कर–भरे रह कर साथीदारों के सुहृद् बन कर, प्रार्थना और संकल्प से महाराज का सुख निरंतर भोगते रहना है।
महाराज का इसी प्रकार से निरंतर दर्शन करते रहने की आदत ही डाल देनी है।
बड़ों के एवं मेरे आशीर्वाद हैं ही। सो, थोड़ी सुरुचि रखना।
लाख गुणा बल वे दे ही देंगे, ऐसा उनका ही संकल्प है।

– प.पू. पप्पाजी, श्रीहरि जयंती - १९८२
(गुणातीत ज्योत पत्रिका के सौजन्य से)

स्वामिश्रीजी

स्वामिनारायण भगवान ने जीतेजी ही अक्षरधाम का सुख लेने की बहुत स्पष्ट बात की,
लेकिन '**अति एकांत की प्यारभरी**' यह बात समझी नहीं गई।
इसीलिए, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी और अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामिजी को अपने सर्वोपरि साकारभाव और दिव्यभाव की बात समझाने की आज्ञा की।
वह भी सच्चे (भगवदी) के प्रसंग के बिना कइयों को रास नहीं आई।
तप, त्याग, योग, व्रत, दान जैसे कई साधनों से जो भगवान वश नहीं होते,
वे '**सत्संग**' से वश में होते हैं, ऐसा अंत्य २ और कई वचनामृतों में महाराज ने बताया।
साधन भक्ति ऋषि–मुनियों ने बहुत की;
सभी ने अपने मनमाने साधनों से भगवान को राजी करने के लिए खूब परिश्रम किया,
लेकिन भगवान राजी नहीं हुए।
सो, '**पराभक्ति ही परमपद है**'–ऐसा कहा
और
ऐसे '**प्रगट गुरुरूप हरि**' या '**वड़वानल जैसे सत्पुरुष**' की '**सच्ची पहचान**' **को ही**
'सच्चा सत्संग' बताया।
सभी उन्हें जानते हैं, लेकिन वे जैसे हैं वैसे उन्हें पहचानना यह बात अलग पड़ गई।
इसलिए कई साधन करने के बावजूद उसका फल और सुख मिला नहीं
और

भीतर में जलन, परेशानी, विक्षेप, आवरण और अभाव प्रतिकूल माहौल में बना ही रहा है
और... मर कर अक्षरधाम मिलने से फायदा भी क्या?
इस बात, इस रहस्य, इस मौज को–
केवल कृपा करके गुणातीतस्वरूप द्वारा इस धरती पर अखंड रह कर
एकांतिक की विरासत और वंश हमेशा के लिए जारी रखने का महाराज ने वचन दिया।
पूर्व के किसी संस्कार से
या
सच्चे साधु के समागम से
या
अति बड़े पुरुष की कृपा से
या
किसी अनुभवी के विश्वास से
अक्षरधाम में हैं वैसे के वैसे ही श्रीजी महाराज और मुक्त इस पृथ्वी के ऊपर माने जाएं
तो सत्संग मिला, उसका फल भी मिला गिना जाए।
फलस्वरूप,
जीतेजी ही अखंड सुख-शांति और आनंद भी मिला करे।
सो, **'उपजी समावे वह संत और न उपजे वह भगवंत'** –
यह बात गुरुकृपा से हमें समझ में आ गई है;
तो अब सहजता से अक्षरधाम का सुख इस पहचान से लेते हो जाएं ऐसी पू. स्वामिश्रीजी को प्रार्थना
और
इस हेतु निम्न दो मुद्दों का जीवनमंत्र हर कोई अपने जीवन में उतारें ऐसी अभ्यर्थना है।

'भगवत्स्वरूप प्रत्यक्ष गुरुरूप हरि के प्रति–
असाधारण प्रीति या असाधारण विश्वास या असाधारण प्रसंग
और... भगवदी के साथ–सुहृद्भाव।'

– प.पू. काकाजी महाराज, १९६८

મૂળ ગુજરાતી:

સ્વામિનારાયણ ભગવાને દેહ છતાં જ અક્ષરધામના સુખની બહુ સ્પષ્ટ વાત કરી,
પણ **'અતિ એકાંતની વ્હાલપની'** આ વાત સમજાઈ નહિ.
તેથી, મૂ. અ.મૂ.ગુણાતીતાનંદસ્વામી અને અ. મ.મુ. સદ્. ગોપાળાનંદસ્વામીને
પોતાના સર્વોપરિ સાકારપણાની ને દિવ્યપણાની વાત સમજાવવા આજ્ઞા કરી.
તે પણ ખરેખરા (ભગવદી)ના પ્રસંગ વગર ઘણાંને સદી નહિ.
તપ, ત્યાગ, યોગ, વ્રત, દાન એવા ઘણા સાધનથી જે ભગવાન વશ ન થાય,
તે **'સત્સંગે'** વશ થાય, એમ છેલ્લાના ૨ અને ઘણાં વચનામૃતોમાં મહારાજે બતાવ્યું.
સાધન ભક્તિ ઋષિ–મુનિઓએ ઘણી કરી;

સૌ-સૌએ પોતે મનના માનેલા સાધનથી ભગવાનને રાજી કરવા બહુ દાખડો કર્યો,
પણ ભગવાન રાજી થયા નહિ.
તે માટે **'પરાભક્તિ એજ પરમપદ છે'**—એમ કહ્યું
અને
એવા **'પ્રગટ ગુરુરૂપ હરિ'** અથવા **'વડવાનળ જેવા સત્પુરૂષ'**ની **'સાચી ઓળખાણ'ને જ**
'સાચો સત્સંગ' ગણાવ્યો.
સૌ તેમને જાણે છે, પણ જેમ છે તેમ ઓળખવું તે વાત જુદી પડી ગઈ.
તેથી સાધનો ઘણાં કરવા છતાંય તેનું ફળ ને સુખ મળ્યું નહિ
ને
બળતરા, મૂંઝવણ, વિક્ષેપ, આવરણ ને અભાવ દેશકાળે રહ્યા
ને... મરીને અક્ષરધામ મળવાથી ફાયદો પણ શો ?
આ વાત, આ રહસ્ય, આ મોજ(ને)—
કેવળ કૃપાએ કરીને ગુણાતીતસ્વરૂપે આ પૃથ્વી ઉપર અખંડ રહીને
એકાંતિકનો વારસો અને વંશ સદાને માટે ચાલુ રાખવાનું (મહારાજે) વચન આપ્યું.
પૂર્વના કોઈક સંસ્કારે
અથવા
ખરેખરા સાધુના સમાગમથી
અથવા
અતિ મોટા પુરૂષની કૃપાએ
અથવા
કોઈ અનુભવીના વિશ્વાસે
અક્ષરધામમાં છે તેવા ને તેવા જ શ્રીજી મહારાજ અને મુક્તો આ પૃથ્વી ઉપર મનાઈ જાય
તો સત્સંગ મળ્યો તેનું ફળ પણ મળ્યું ગણાય
ને
તેથી દેહ છતાં જ અખંડ સુખ-શાંતિ ને આનંદ પણ મળ્યા કરે.
માટે, **'ઊપજી સમાવે તે સંત અને ન ઊપજે તે ભગવંત'**—
આ વાત ગુરૂકૃપાથી આપણને સમજાઈ છે ;
તો હવે સ્હેજે સ્હેજે અક્ષરધામનું સુખ આ ઓળખાણથી લેતા થઈએ એવી પૂ. સ્વામિશ્રીને પ્રાર્થના
ને
એ માટે, નીચે જણાવેલો બે મુદ્દાનો જીવનમંત્ર સહુ કોઈ જીવનમાં ઉતારે એવી અભ્યર્થના છે.

'ભગવત્સ્વરૂપ પ્રત્યક્ષ ગુરૂરૂપ હરિને વિષે—
અસાધારણ પ્રીતિ અથવા અસાધારણ વિશ્વાસ અથવા અસાધારણ પ્રસંગ
અને... ભગવદી સાથે—સુહૃદયપણું'.

— પ.પૂ.કાકાશ્રી, ૧૯૬૮

✡✡✡

याद कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव
'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव' के रूप में मनाएंगे;
जब **'एकता ही एकांतिकभाव'** के सिद्धांत से ब्रह्मकिल्लोल करने का
एक अनमोल मौका हम सभी को मिलेगा।
सो, हम 'गुरुभक्ति' अदा करने का यह मौका न चूकें...
प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त
प.पू. गुरुजी और प.पू. काकाजी के अनुभव,
जो आपको भीतर तक छू गए हों,
उन्हें हिन्दी/ अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते पर भेजते रहें,
जिससे कि 'भगवत् कृपा' के इस स्तंभ के अंतर्गत
वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ
'યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ' રૂપે ઊજવીશું;
જ્યારે **'એકતા એ જ એકાંતિકપણું'**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો
એક લ્હાવો અમ સહુને મળશે.
આપણે 'ગુરૂભકિત' અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...
પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે
પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. કાકાશ્રીના અનુભવ-પ્રસંગો
જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય,
એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો,
જેથી 'ભગવત્ કૃપા'ના આ સ્તંભ હેઠળ
એ આપવાની અમે ભકિત અદા કરી શકીએ.

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

'योगी परिवार का अद्भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

आशीर्वाद...

Anoopam Mission

૭મી માર્ચ '૧૦

।। સ્વામિશ્રીજી ।।

સ્વામિનારાયણ ભગવાનના આશ્રિત એવા બ્રાહ્મણ કુળમાં જન્મેલ એક યુવાન મુંબઈની કૉલેજમાં ગ્રૅજ્યુએટ થયો... ઉચ્ચ કુળમાં જન્મ્યાનું જાણપણું અને તેમાં સાયન્સના ગ્રૅજ્યુએટ થયા... વિચક્ષણ બુદ્ધિમત્તા, લાગણીશીલતા સાથે ખૂબ જ ચંચળતા ને યુવાનીના જોશ-હોશ-ઉત્સાહ વધારાનાં... આવા યુવાનોને સીધું ઊતરે તો ખુશ-આનંદ અને જો વાંકું પડે કે ઊંધું ઊતરે તો પોતાને તો દુઃખનો પાર નહીં, પણ આજુબાજુના બીજાઓને પણ તેમાં દુઃખી કરી નાખે. આવા યુવાનની પડખે ચડવામાં સૌ જોખમ જ સમઝે...

પણ, આવા આ બધા દેહના ભાવોમાં રમમાણ આ યુવાનનો આત્મા પ્રભુની અનન્ય કૃપાનું પાત્ર હતો... તેથી યુવાનીમાં બીજે-ત્રીજે તે ખેંચાઈ જાય તે પહેલાં પ્રભુધારક એવા બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીબાપાએ પોતાની દૃષ્ટિમાં લઈ, અસાધારણ હેત-પ્રેમમાં ખેંચી, આ દેહની બધી જ શક્તિઓને ચૅનલાઈઝ કરી, દિવ્ય બનાવી, પોતાના જેવા બનાવવા એવા જ બ્રહ્મસ્વરૂપ સંત પ.પૂ. કાકાજીના યોગમાં મૂક્યા.

તેમાં પ.પૂ. સોનાબાનું વાત્સલ્ય વરસતાં આ યુવાન પૂરેપૂરો ભક્તિના રંગે રંગાયો ને આખા સમાજને પોતાના દેહની પ્રકૃતિ-સ્વભાવ કે બુદ્ધિની તીક્ષ્ણતાથી દુઃખી બનાવે-દુઃખી કરી મૂકે તેના બદલે, તે જ બુદ્ધિમત્તા, ચંચળતા, લાગણીશીલતામાં દિવ્યતા પ્રગટતાં આખા સમાજને ઉપર ઉઠાવવાના પ્રભુના કાર્યના ભાગીદાર બની ગયા. **આ છે શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાન, શ્રી ગુણાતીતાનંદસ્વામીની શ્રી અક્ષર-પુરૂષોત્તમની યુગલ ઉપાસનાનું રહસ્ય... પ્રભુ સાકાર ને પ્રગટ છે; તે ઉપાસનાનું રહસ્ય !**

આ યુવાન તે જ આપણા પ.પૂ. ગુરૂજી.

યુવાનીના પ્રવેશે જ શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનના અખંડ ધારક સંત પ.પૂ. યોગીબાપા અને પ.પૂ. કાકાજીના હેત-પ્રેમના પાસમાં બંધાયા... જગત તરફ જવાના ધ્રોડા મટી ગયા... પોતે ભગવા કપડાં ધારણ કરી, દાદર મંદિરે પૂ. મહંતસ્વામિજીના સાંનિધ્યે સંસ્કૃત ભણ્યા; જેમાં તેઓની જરાય રૂચિ નહીં, પણ 'ગુરૂઆજ્ઞા'ને જ જીવન માનતા, તો સંસ્કૃત ભણવામાં પણ અવ્વલ નંબર રહ્યા. વળી, સભાઓ કરવી કે સત્સંગ મંડળમાં વિચરણ કરવું, સૌની સાથે હળીમળી કાર્ય કરવું—તે પ્રકૃતિમાં જ નહીં, પણ પ.પૂ. કાકાજીની મરજી, રૂચિ-દિલ્હી

જઈને આ કાર્યમાં જોડાવાની જોઈ, તે ગમાડીને તેઓની આજ્ઞાથી આનંદપૂર્વક દિલ્હી ગયા ને તેમાં પૂરી લગનથી-દિલથી લાગી ગયા. તો આજે આપણને સૌને પ.પૂ. ગુરૂજી રૂપે પ્રભુધારક સાધુની ભેટ મળી છે તે ઓળખાણ પડી.

આવા સાધુમાં પ્રભુ અખંડ રહ્યા છે; જેથી તેઓનાં દર્શને, વાતોથી, સાંનિધ્યથી સૌને અનેરો આનંદ, શાંતિ મળે તેની દિલ્હીના પ્રભુના સંબંધવાળા મુક્તોને અનુભૂતિ થતાં એક નવો ને શિસ્તબદ્ધ, ભક્તિસભર સમાજ તૈયાર થયો. એનાં દર્શન કે વર્તન જોઈને થાય કે આવા સમાજને ઘડનાર પ્રભુધારક સંત જ હોય!

પ.પૂ. ગુરૂજી એવા સંત છે... તો આજે ભારતના પાટનગર દિલ્હીમાં એક નવો જ સમાજ અસ્તિત્વમાં આવ્યો. શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજના અક્ષરપુરૂષોત્તમ ઉપાસનાના કાર્યનો ઉત્તર ભારતમાં ડંકો વગાડયો છે ને પાછા દાસત્વથી ભર્યા-ભર્યા છે. તેઓના સંપર્કમાં આવનાર કે તેઓના સાંનિધ્યમાં વસનાર, દર્શન કરનાર સૌને તેઓની સરળતા, સાદાઈ, નિર્દંભપણું, નિર્માનીપણું, દિવ્યતાસભર વિચક્ષણ બુદ્ધિમત્તા, કપટરહિતપણું, વિચાર-વાણી-વર્તને એકતા; આ બધા સાથે બીજા પણ વિશિષ્ટ ગુણોનાં દર્શન થયા વગર રહેતાં નથી.

સાથે સાથે એટલા જ પ્રેમાળ. ભક્તોમાં રસબસ થઈ સૌને હળવાશ-હૂંફ આપનાર, માતાના વાત્સલ્યભાવમાં ભીંજવી, દોષ રહિત કરનાર અદ્‌ભુત સાધુની પ્રભુએ આપણને ભેટ આપી છે; તો તેઓનું જતન કરીએ ને તેઓની તબિયત સારી રહે, તેઓના સાંનિધ્યમાં સૌ સર્વ વાતે તન-મન-ધનથી સુખિયા સુખિયા બની રહે તેવી તેઓના પ્રાગટ્યપર્વની ગુરૂચરણે-પ્રભુચરણે સૌ વતીથી પ્રાર્થનાઓ છે!

– પ.પૂ. સાહેબ, બ્રહ્મજ્યોતિ

[प.पू. साहेबजी के आशीर्वाद का हिन्दी अनुवाद]

स्वामिश्रीजी ७ मार्च '१०

भगवान स्वामिनारायण के आश्रित एक ब्राह्मण परिवार का युवक मुंबई की कॉलेज से विज्ञान का ग्रॅज्युएट हुआ। उच्च ब्राह्मण कुल में जन्म और विलक्षण बुद्धिमत्ता से प्राप्त विज्ञान में स्नातक की उपाधि के साथ इस युवान में चंचलता, उत्साह और जवानी का जोश छलक रहा था।

ऐसे तेज युवा को कुछ सीधा पड़े, तो खुश-खुशहाल रहे और यदि उल्टा पड़े, तो स्वयं तो अत्यंत दुःखी एवं विक्षुब्ध हो जाए, इतना ही नहीं, आस-पास के और लोगों को भी दुःखी कर दे। सो, ऐसे युवाओं के नज़दीक फटकने में भी सभी को जोखिम लगता है।

किन्तु, इस युवक में भले ही अपनी तेज प्रकृति-देहभाव था, पर उसकी आत्मा प्रभु की अनन्य कृपा की पात्र थी। इसीलिए, वह युवान कहीं और आकर्षित हो जाए, उससे पहले ही, प्रभु के अखंड धारक ब्रह्मस्वरूप योगीबापा ने उसे अपनी कृपादृष्टि में लेकर, असाधारण लगाव-प्रेम में भिगो करके, उसकी सारी दैहिक

शक्तियों को चॅनलाईज़ करके, दिव्य बना कर, अपने जैसा बनाने हेतु ऐसे ही ब्रह्मस्वरूप संत परम पूज्य काकाजी का योग प्रदान किया। साथ ही, परम पूज्य सोनाबा के दिव्य वात्सल्य से यह युवक पूरी तरह भक्ति के रंग में रंग गया।

यूँ, जो प्रकृति-स्वभाव एवं बुद्धि की कुशाग्रता समाज को दुःखी कर सकती थी, उसी बुद्धि एवं संवेदना में दिव्यता प्रगट होते ही, वह युवक समाज को उर्ध्वगामी बनाने के लिए प्रभु के कार्य में सहयोगी हो गया! **यह है भगवान स्वामिनारायण और श्री गुणातीतानंदस्वामी की साकार और प्रगट श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना का रहस्य!**

वह युवक कोई और नहीं, बल्कि हमारे परम पूज्य गुरुजी हैं।

भगवान स्वामिनारायण के अखंड धारक संत परम पूज्य योगीबापा एवं परम पूज्य काकाजी के असाधारण प्रेमपाश में, परम पूज्य गुरुजी अपनी युवावस्था में ही बंध गए। जगत के प्रति उनकी दौड़ सहज ही थम गई। भगवे वस्त्र धारण कर, परम पूज्य गुरुजी ने मुंबई में दादर स्थित श्री स्वामिनारायण मंदिर में परम पूज्य महंतस्वामिजी की निश्रा में, संस्कृत का अध्ययन किया। इस अध्ययन में उनकी ज़रा भी रुचि न होने के बावजूद, केवल 'गुरु आज्ञा' को जीवन मानने वाले परम पूज्य गुरुजी इस अध्ययन में भी अव्वल रहे।

सत्संग मंडलों में जाना, सभाएँ करनी और हर एक के साथ मिलजुल कर कार्य करना – उनकी प्रकृति में न होते हुए भी, परम पूज्य काकाजी की मर्जी-रुचि को जान कर, उनकी आज्ञानुसार परम पूज्य गुरुजी दिल्ली गए और... ऐसे सभी कार्यों में आनंदपूर्वक पूर्ण रूप से जुड़ गए। फलस्वरूप, आज हम सब को प्रभु के धारक साधु रूप परम पूज्य गुरुजी की प्राप्ति हुई है – यह पहचान पड़ी!

ऐसे संत में भगवान का अखंड निवास है। सो, उनके दर्शन, कथा एवं सान्निध्य से सबको एक अनूठे आनंद और शांति का अनुभव होता है। प्रभु के संबंध वाले दिल्ली के मुक्तों को ऐसी अनुभूति होने से एक नए, अनुशासित और भक्तिपूर्ण समाज का निर्माण हुआ है। इस समाज के व्यवहार से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ऐसे समाज को घड़ने वाला प्रभु का धारक संत ही हो सकता है। परम पूज्य गुरुजी ऐसे संत हैं!

तब ही, आज भारत की राजधानी दिल्ली में ऐसा भक्तिपूर्ण नूतन समाज अस्तित्व में आया है और उत्तर भारत में ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज का – अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना का कार्य डंके की चोट पर हुआ है।

इसके अतिरिक्त, गुरुजी दासत्व से भरपूर हैं। उनके संपर्क में आने वाले, उनके सान्निध्य में रहने वाले, उनके दर्शन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को परम पूज्य गुरुजी की सरलता, सादगी, निर्दंभता, निर्मानीभाव, दिव्यता युक्त विचक्षण बुद्धिमत्ता, कपटरहित जीवन तथा विचार-वाणी-वर्तन के ऐक्य सहित अनेक विशिष्ट गुणों का दर्शन एवं अनुभव सहज ही होता है। साथ-साथ इतने ही प्रेमी हैं! यूँ, भक्तों में रसरूप होकर, उन्हें अपनी उष्माभरे मातृ वात्सल्य से दोषरहित करने वाले अद्‌भुत साधु की प्रभु ने हमें भेंट दी है; तो हम उनकी 'कॅर' करें। उनका स्वास्थ्य निरामय रहे और उनके सान्निध्य में सब को हर तरह से तन-मन-धन का सुख प्राप्त हो, ऐसी परम पूज्य गुरुजी के प्रागट्य पर्व पर गुरु एवं प्रभु के चरणों में सभी की ओर से हमारी प्रार्थना है!

સ્વામિશ્રીજી

सौरभ - ९

પ.પૂ. સ્વામીશ્રી એમના પ્રવચનમાં હંમેશા કહે છે– *'જાગ્રત ચૈતન્યના ભગવાન છે.'* **પ.પૂ. ગુરૂજી એક એવા સંત છે, જે ખરેખર જાગ્રત છે. સાથોસાથ ખરેખરા ભજનીક છે.** બુદ્ધિપ્રધાન વ્યક્તિને ભજન કરવું બહુ અઘરું પડે. દરેક પ્રસંગે ભગવાનને સંભારીને, ઉપાયભૂત કરીને, એમના બળે જીવવું એને માટે કઠિન સાધના છે. પણ **પ.પૂ. ગુરૂજીના જીવનમાં આ બધાં ગુણો સહજ છે.**

એક વખત ભૂલકું બંસરી દિલ્હી મંદિરમાં શ્રીઠાકોરજીના દર્શને આવ્યા હતા. એમણે પ.પૂ. ગુરૂજીને કહેવડાવ્યું કે *'મને માળા જોઈએ છે.'* પ.પૂ. ગુરૂજીએ પોતાની (પ્રસાદીની) માળા મોકલાવી. ભૂલકું બંસરી રાત્રે માળા ફેરવીને ભજન-પ્રાર્થના કરી સૂઈ ગઈ.

રાતે અઢી વાગ્યાના સુમારે એ દીકરીને એવો અનુભવ થયો કે માળામાંથી અવાજ આવે છે– *'ઊઠ! ભજન કર.'* એટલે બીજે દિવસે એણે પ.પૂ. ગુરૂજીને પૂછાવડાવ્યું કે રાત્રે આ માળામાંથી અવાજ આવ્યો કે– *'ઊઠ ભજન કર; તો મારે શું સમજવાનું?'*

ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ હસતાં-હસતાં ઉત્તર આપતા કહેવડાવ્યું કે,
'હું રોજ રાતે અઢીથી સાડા ચાર ભજન કરૂં છું, એટલે માળાને આદત પડી હશે કે એનો માલિક રોજ રાત્રે એને ફેરવે છે; તેથી તને ઊઠાડી હશે.'
આમ માળા એને રોજ જગાડતી અને એને ય ભજનની ટેવ પાડી દીધી!
પ.પૂ. ગુરૂજી કઈ કક્ષાએ ભજનના આગ્રહી હશે કે માળાના મણકા પર પણ એ પ્રભાવ છવાઈ ગયો હતો!

પ.પૂ. સ્વામીશ્રી સંબંધનો અપંરપાર મહિમા સમજાવતા કહે છે કે,
'જેવો બીજાના સ્વભાવ જોવાનો આગ્રહ છે, તેવો ભગવાનનો સંબંધ જોવાનો આગ્રહ થઈ જાય તો કાંઈ કસર રહે નહિ.'

પ.પૂ. ગુરૂજીના જીવનમાં ગુણાતીત સ્વરૂપોના સંબંધવાળા માટે મહિમા અને અપાર દિવ્યભાવ સમાયેલા છે. કોઈ પણ વ્યક્તિનું એક જ વાર ગુણાતીત સ્વરૂપે નામ લીધું હોય, તો એ પાત્ર માટે એમને સહજ પ્રીતિ છે. પ.પૂ. ગુરૂજી ખૂબ જ જતનથી એ પાત્રને સાચવે...

ભગવત્સ્વરૂપ પ.પૂ. કાકાશ્રી વર્ષો પહેલાં જ્યારે લંડનની ધરતી પર વિચરણ કરતા હતા ત્યારે એક યુવક, જે પ.પૂ. સ્વામિશ્રી સાથે હેતથી જોડાયેલો હતો, તેને પ.પૂ. કાકાશ્રીના ગાડીના સારથીની સેવા મળતી. એ યુવક ભકિતપૂર્ણ હૃદયથી અને ખૂબ ઉમંગથી સેવામાં હાજર રહેતા. તે યુવકને 'લીન્ટ ઍક્સેલન્સ' ની ચૉકલેટ ખૂબ ભાવતી.

વર્ષો પછી, તા. ૨૭-૩-૨૦૦૭ રામનવમીના દિવસે, જ્યારે એ યુવક દિલ્હી મંદિરે દર્શને પહોંચ્યા, ત્યારે એ યુવકને શું ભાવે છે–તે વાત પ.પૂ. ગુરૂજીએ કેવી યાદ રાખી હશે કે એ જ કંપનીની ને એ જ ડાર્ક ચૉકલેટ અડધા કલાકમાં જ મંગાવીને એ યુવકને આપી!

તે યુવકે જ્યારે કહ્યું કે, *'કંઈક આશીર્વાદ લખીને આપો'* ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ સત્સંગનો મચકૂર પકડાવતાં આશીર્વાદ લખી આપ્યા કે–

*ગમે તેવા સંજોગોમાં **'હું સ્વામિજીનો ને સ્વામિજી મારા'** એ માનીનતા પકડી રાખવી જ અને **આ ગુણાતીત સમાજમાં જ જનમ્યા છીએ એમ માનવું.** આ આશીર્વાદ...*

ગુરૂહરિ સ્વામિશ્રી ઘણી વખત બોલ્યા છે કે **બુદ્ધિ અને દિલનો સમન્વય એકસાથે** શક્ય નથી. એ બંને એકસાથે **જોવા મળે એ કૃપાનું પાત્ર કહેવાય. પ.પૂ. ગુરૂજી એવા દિલદાર સાધુ છે,** જે ભક્તોની સેવા-સરભરા ખૂબ ભકિત અને ઉમંગથી કરે.

૧૯૮૯માં હરિધામના સહિષ્ણુ ભાઈઓ દિલ્હી મંદિરે દર્શન કરવા માટે ગયા હતા. પ.પૂ. ગુરૂજીએ અનેરા ઉમંગથી આનંદ ઉત્સવનું આયોજન કર્યું હતું. તેમાં સહિષ્ણુ ભાઈઓ અને સેવકોને દિલભરીને જમાડવાના હેતુથી પ.પૂ. ગુરૂજીએ સહિષ્ણુભાઈઓને ઉત્સાહ પ્રેરતા કહ્યું – *'આ રસમલાઈ ભરેલી એક ચાકી કોઈ એક જ યુવક જમી જાય તો એ માંગે તે આપવું.'* શરત મુજબ ત્રણે ય સહિષ્ણુભાઈઓ એક-એક ચાકી જમી ગયા. પ.પૂ. ગુરૂજીએ ખૂબ જ રાજી થઈને કહ્યું – *'તમે કંઈક માંગો!'*

સહિષ્ણુભાઈઓએ પ્રાર્થના કરતાં કહ્યું કે, *'આપ જેવી સ્થિરતાથી ભજન કરી શકો છો, એવું ભજન અમે કરી શકીએ એવા આશીર્વાદ પ.પૂ. સ્વામિશ્રી પાસે અમને અપાવો.'* પ.પૂ. ગુરૂજીએ પ્રાર્થના તો કરી, પણ સાથોસાથ રાજી થઈને ઉમળકાભેર બધાં જ સહિષ્ણુભાઈઓને શાલ ઓઢાડી અને જમનાર ભાઈઓને પ્લેનની ટિકીટ કઢાવી આપી. એવી પરાભકિત એમને સહજ વરેલી છે.

પ.પૂ. સ્વામિશ્રી શ્રી નીલકંઠ વર્ણીની ગુરૂભકિત બિરદાવતા કહે છે કે – *'રામાનંદસ્વામી માટે આખા બ્રહ્માંડની લોપડી બનાવવી પડે તો પણ શું?'*

આ ગુરૂભકિતને જાણે નિશાન ન બનાવ્યું હોય – એવું દર્શન પ.પૂ. ગુરૂજીના જીવનમાં પ.પૂ. કાકાશ્રી પ્રત્યેનું સહજ દેખાય.

એકવાર એમના પ્રાગટ્યદિને પ્રવચનમાં વાત કરતા કહ્યું:

એક ગામમાં એક ગરીબ માણસ રહેતો હતો. સંજોગોને આધીન એ ભાઈ પાસે ખૂબ પૈસા આવ્યા. પછી જ્યારે એ ગામમાંથી નીકળે એટલે બધાં એમને સામેથી **'જય સ્વામિનારાયણ'** કહેવા લાગ્યા. તેથી એ ભાઈએ કહ્યું કે, *'આ મને નહિ પરંતુ મારી પાસે જે પૈસો આવ્યો છે એને **જય સ્વામિનારાયણ** કહી રહ્યા છે, બાકી હું તો એનો એ જ માણસ છું, જે પહેલા હતો.'*

આ પ્રસંગ સમજાવતા પ.પૂ. ગુરૂજીએ કહ્યું કે:

*'આપણને આજે પ.પૂ. કાકાજી, પ.પૂ. પપ્પાજી, પ.પૂ. સ્વામિશ્રીને લઈને કોઈ પૂછે છે, પગે લાગે છે. બાકી આપણો કોઈ ભાવ પૂછે નહિ. એ ગરીબ માણસની એટલી વફાદારી કે **પૈસાના જય સ્વામિનારાયણ એમણે પૈસાને જ પ્હોંચાડયા, પરંતુ પોતાની મોટપ માની નહિ.** એમ, આજે આટલા બધા ભક્તો સેવા કરે છે, મરી ફીટે છે. પણ કોને લઈને? તો, પ.પૂ. કાકાશ્રી, પ.પૂ. પપ્પાશ્રી અને પ.પૂ. સ્વામિશ્રીને લઈને! એમના સુધી પ્હોંચાડવાનું અમે ભૂલીએ નહિ.'* આવી પ્રાર્થના કરેલી.

આટલા માન-મોટપ મળ્યા પછી ગુરૂજનોને આગળ રાખી, હંમેશા 'સેવકભાવે' જીવવું એ અક્ષરપુરૂષોત્તમ પ્રણાલીની ગરિમાનું દર્શન પ.પૂ. ગુરૂજી કરાવી રહ્યા છે!

ધન્ય હો પ.પૂ. ગુરૂજીની ભકિતને...! ગુરૂભકિતને...! પરાભકિતને...!!

આપના એ અનુપમ ગુણોને અમારા જીવનમાં ચરિતાર્થ કરી શકીએ એ જ અભ્યર્થના સાથે જય સ્વામિનારાયણ.

– પૂ. પ્રેમબ્હેન (હરિધામ)

[हिन्दी अनुवाद]

स्वामिश्रीजी

प.पू. स्वामिजी अपने आशीर्वचन में हमेशा कहते हैं – *'जाग्रत चैतन्य के भगवान हैं।'* **प.पू. गुरुजी एक ऐसे संत हैं, जो वाकई जाग्रत हैं। साथ ही साथ सच में भजनीक हैं।** बुद्धिप्रधान व्यक्ति के लिए भजन करना बहुत मुश्किल है। हर प्रसंग पर भगवान को याद करके, उपायभूत करके, उनके बल से जीना उसके लिए कठिन साधना है। लेकिन, **प.पू. गुरुजी के जीवन में ये सभी गुण सहज हैं।**

एक बार भूलकुं बंसरी दिल्ली मंदिर में श्री ठाकुरजी के दर्शन करने के लिए आई। उसने प.पू. गुरुजी से कहलवाया– *'मुझे माला चाहिए।'* सो, प.पू. गुरुजी ने अपनी (प्रसादी की) माला भिजवाई। भूलकुं बंसरी रात को माला फेर कर भजन-प्रार्थना करके सो गई।

रात को ढाई बजे के करीब उस लड़की को ऐसा एहसास हुआ कि माला में से आवाज़ आ रही है – *'उठ! भजन कर।'* सो, दूसरे दिन उसने प.पू. गुरुजी से पुछवाया कि रात को इस माला में से आवाज़ आई थी कि *उठ भजन कर; तो मुझे क्या समझना चाहिए?* तब प.पू. गुरुजी ने हँसते-हँसते उत्तर देते हुए कहलवाया– *'मैं रोज रात को ढाई से साढ़े-चार तक भजन करता हूँ। सो, माला को आदत पड़ गई होगी कि उसका मालिक रोज रात को उसे फेरता है; इसीलिए तुझे जगाया होगा।*
यूँ, वह माला उसे रोज जगाती और (माला ने) उसे भी भजन करने की आदत डलवा दी।
प.पू. गुरुजी किस कक्षा के भजन के आग्रही होंगे कि माला के मनकों पर भी उसका प्रभाव पड़ गया था!

प.पू. स्वामिजी कई बार संबंध की अपार महिमा समझाते हुए कहते हैं–
'जैसे दूसरों के स्वभाव देखने का आग्रह है, वैसा भगवान का संबंध देखने का आग्रह हो, तो कोई कसर रहेगी नहीं।'

प.पू. गुरुजी के जीवन में गुणातीत स्वरूपों के संबंध वालों के प्रति महिमा और अपार दिव्यभाव समाया हुआ है। किसी भी व्यक्ति का एक ही बार गुणातीत स्वरूप ने नाम लिया हो, तो उस पात्र के लिए उन्हें सहज प्रीति है। प.पू. गुरुजी बहुत ही जतन से उस पात्र को संभालते हैं...

भगवत्स्वरूप प.पू. काकाजी वर्षों पहले जब लंडन की धरती पर विचरण करते थे, तब एक युवक–जिसे प.पू. स्वामिजी के साथ लगाव था–को प.पू. काकाजी की गाड़ी ड्राईव करने की सेवा मिलती। वह युवक भक्तिपूर्ण हृदय और खूब उमंग से सेवा में हाज़िर रहता। उस युवक को 'लीन्ट एक्सेलन्स' की चॉकलेट खूब भाती थी।

वर्षों के बाद, दि. २७-३-२००७ को रामनवमी के दिन, जब वह युवक दिल्ली मंदिर में दर्शन करने पहुँचा, तब उस युवक को क्या भाता है–वह बात प.पू. गुरुजी को कैसी याद होगी कि उसी कंपनी की और वैसी डार्क चॉकलेट आधे घंटे में ही मंगा कर उस युवक को दी!

उस युवक ने जब कहा–*'कुछ आशीर्वाद लिख कर दे दो'*, तब प.पू. गुरुजी ने सत्संग का मर्म बताते हुए आशीर्वाद लिखे–
कैसे भी संजोगों में ***'मैं स्वामिजी का और स्वामिजी मेरे'*** *यह मान्यता पकड़े ही रखना और* ***इस गुणातीत***

समाज में ही जन्मे हैं ऐसा मानना। *यह आशीर्वाद...*

गुरुहरि स्वामिजी कई बार बोले हैं– **बुद्धि और दिल का समन्वय एक साथ संभव नहीं है।** ये दोनों एक साथ (जिसमें) **देखने को मिलें, उसे कृपा का पात्र कहा जाए। प.पू. गुरुजी ऐसे दिलदार साधु हैं,** जो भक्तों की सेवा-संभाल खूब भक्ति और उमंग से करते हैं।

१९८९ में हरिधाम से सहिष्णु भाई दिल्ली मंदिर के दर्शन करने के लिए गए थे। प.पू. गुरुजी ने अद्‌भुत उमंग से आनंद उत्सव का आयोजन किया था। उसमें सहिष्णु भाइयों और सेवकों को खूब दिल से भोजन कराते हुए प.पू. गुरुजी ने उन्हें उत्साहित करते हुए कहा–

'यह रसमलाई भरी हुई एक ट्रे कोई एक ही युवक खा जाए, तो वह जो मांगे वह दूँगा।' शर्त के मुताबिक तीनों सहिष्णु भाई एक-एक ट्रे खा गए। प.पू. गुरुजी ने बहुत प्रसन्न होकर कहा– *'तुम कुछ मांगो!'*

सहिष्णु भाइयों ने प्रार्थना करते हुए कहा, *'आप जैसी स्थिरता से भजन कर सकते हैं, वैसा भजन हम कर सकें ऐसे आशीर्वाद प.पू. स्वामिजी से हमें दिलवाना।'* प.पू. गुरुजी ने प्रार्थना तो की ही, लेकिन साथ ही साथ प्रसन्न होकर उमंग से सभी सहिष्णु भाइयों को शाल ओढ़ाई और जिन भाइयों ने रसमलाई खाई थी, उनकी प्लेन की टिकिट करवा दी। ऐसी पराभक्ति उनमें सहज ही है।

प.पू. स्वामिजी श्री नीलकंठ वर्णी की गुरुभक्ति का बखान करते हुए कहते हैं – *'रामानंदस्वामी के लिए सारे ब्रह्मांड की पॅस्ट बना देनी पड़े तो भी क्या?'*

इस गुरुभक्ति को मानो निशान ही बना लिया हो – ऐसा दर्शन प.पू. गुरुजी के जीवन में प.पू. काकाजी के प्रति सहज दिखाई देता है।

एक बार अपने प्रागट्य दिन के प्रवचन के दौरान बात करते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा :

एक गाँव में एक गरीब व्यक्ति रहता था। संजोगों के आधीन उसके पास खूब पैसा आया। तो, जब भी वह गाँव में निकले, उसे सभी सामने से **'जय स्वामिनारायण'** कहने लगे। तब, उसने कहा– *'ये मुझे नहीं, बल्कि मेरे पास जो पैसा आया है, उसे* ***जय स्वामिनारायण*** *कह रहे हैं, बाकी मैं तो वही व्यक्ति हूँ, जो पहले था।'*

यह प्रसंग समझाते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा :

'हमें भी आज प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी के कारण ही कोई पूछता है, पाँव छूता है – बाकी हमारा कोई भाव भी नहीं पूछेगा। उस गरीब व्यक्ति की कितनी वफादारी कि ***पैसे का जय स्वामिनारायण उसने पैसे को ही पहुँचाया, अपना बड़प्पन नहीं माना।*** *ऐसे ही आज इतने सारे भक्त सेवा करते हैं, मर-मिटते हैं। लेकिन किसके कारण? तो, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी के कारण! उन तक पहुँचाना हम भूलें नहीं।'* ऐसी प्रार्थना की थी।

इतना मान-बड़प्पन मिलने के बावजूद गुरुजनों को आगे रख कर, हमेशा 'सेवकभाव' से जीना – अक्षरपुरुषोत्तम प्रणाली की ऐसी गरिमा का दर्शन प.पू. गुरुजी करवा रहे हैं!

धन्य हो प.पू. गुरुजी की भक्ति को...! गुरुभक्ति को...! पराभक्ति को...!!

आपके ये अनुपम गुण हम अपने जीवन में चरितार्थ कर सकें इसी अभ्यर्थना के साथ जय स्वामिनारायण!

– पू. प्रेम बहन (हरिधाम)

સ્વામિશ્રીજી

सौरभ - १०

પૂર્વાશ્રમમાં દાદા ભાદરણવાળા પુરૂષોત્તમ ભગવાનને માનતા હતાં. વળી, અમારાં ઘરની સામે જ **'સ્વામિનારાયણ'**નું મંદિર હતું. ત્યાં કોઈ સમૈયો હોય કે જન્માષ્ટમીનો તહેવાર હોય કે હિંડોળા હોય કે અન્ણકૂટની આરતી થતી ત્યારે દર્શન કરવા જતો.

મને પ.પૂ. ગુરૂજીના પહેલી વાર દર્શન ૧૯૮૧ની ૧૨મી એપ્રીલે એ મંદિરે એક સમૈયામાં થયેલા. ત્યારે **પ.પૂ. ગુરૂજી પ્રવચન કરી રહ્યા હતા અને પહેલી નજરે જ મને એમના પ્રત્યે ખેંચાણ થઈ ગયું.**

પછી ૧૯૮૧ની ૧૩મી મેએ પહેલી વાર સંતોની સેવામાં મારે દિલ્હી આવવાનું થયું. છત્તરપુર મંદિરે રહેતો. ભણવાનું અને 'સંતોની સેવા' બન્ને સાથે થયું. **પ.પૂ. કાકાજી** દિલ્હી આવતા ત્યારે, જ્યાં સુધી છત્તરપુર મંદિર સૅન્ટર ચાલતુ ત્યાં સુધી, એક રાત્રિ રોકાણ માટે છત્તરપુર જરૂર આવતા. ત્યાં મોટેરા સંતો અને સેવકોની વાતોમાં એક વાત આવતી–

'મોટા પુરૂષોને ઓશિયાળા ન કરવા. પોતે ઓશિયાળા થવું, પણ મોટા પુરૂષોને કરવા નહીં અને આપણી પાસે જે કાંઈ કરાવવા માગે તે માટે ના નહીં કરવી.'

એવી વાતો આવતી. એ વાતોને મેં પકડી રાખેલી.

૧૯૮૩ની વાત છે, માર્ચ મહીનામાં હું અશોકવિહાર મંદિરે રહેવા આવ્યો. લગભગ ૧ મહીનો થયો હશે ને સવારમાં ૯ વાગ્યાની આસપાસનો સમય હશે. હું પ.પૂ. ગુરૂજીને નાસ્તો કરાવવા બેઠો હતો. ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને સહજ જ પૂછ્યું– *'તું સાધુ થઈશ ?'* તો, મેં તરત જ હા પાડી. પોતાની પ્રસન્ણતા બતાવતાં રસોઈમાંથી મારી પાસે કપ મંગાવી, કપમાં પોતાના હસ્તે જ ઉકાળો નાખી મને પ્રસાદરૂપે આપ્યો અને પોતાની પાસે બેસાડી ઉકાળો પીવડાવ્યો. થોડી વાર પછી પ.પૂ. ગુરૂજીએ ઘરની માહિતી વિષે પુછ્યું– *'ઘરમાં બધાં શું કરે છે ?'* મેં બધી માહિતી આપી ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજી બોલ્યા કે *મહારાજ સૌ સારાવાનાં કરશે. તને ભરોસો છે ને ?* એમ બે વાર પુછ્યું. તો, મેં *'હા'* પાડી.

આમ પ.પૂ. ગુરૂજીના સાન્ણિધ્યમાં એક વરસ વીત્યું. ત્યાં ૧૯૮૪માં ૧૩મી માર્ચે પ.પૂ. ગુરૂજીની જયંતિનો દિવસ આવ્યો.

પ.પૂ. કાકાજી દિલ્હી મંદિરે વિરાજમાન હતાં. સાંજના લગભગ ૫ વાગ્યાનો સમય હતો. આજુ-બાજુ સંતો ને હરિભક્તો–ચાંદપ્રકાશજી, ચૌધરી સાહેબ, પટેલ સાહેબ વગેરે બેઠા હતા. ત્યારે પ.પૂ. કાકાજીએ ચાંદીની કંઠી પહેરાવતા મને પુછ્યું– *'તું સાધુ થઈશ ?'* ત્યારે પણ મેં *'હા'* પાડી. ત્યારે પ.પૂ. કાકાજી બોલ્યા– ***'ભગવા કપડાં પહેરીને તો થવાનું, પણ અંતર પણ ભગવું કરવું.'*** એવી ભગવત્ ભાવનાવાળા સાધુના મહીમાની ઘણી વાતો કરી ૭:૩૦ના પ્લેનમાં પ.પૂ. કાકાજી મુંબઈ પધાર્યા.

થોડા દિવસ વીત્યા હશે ને મને ખબર પડી કે પ.પૂ. સ્વામિજીની સુવર્ણજયંતી નિમિત્તે ૧ થી ૪ મે

પ.પૂ. ગુરૂજી સાથે આણંદ જવાનું છે. ઘણાં બધાં હરિભક્તો સાથે હતાં. સુવર્ણજયંતીના સમૈયામાં જવાના આનંદને બદલે મારા મનમાં મૂંઝવણ હતી કે મને પકડીને ઘરે લઈ જશે તો ?

૧ થી ૪ સુધીનો સમૈયો પૂરો થયો. સાંજના બધાં ય હરિભક્તો-સંતોને પ.પૂ. કાંતિકાકાના ફાર્મ પર નાપા જવાનું થયું. પ.પૂ. કાકાજી પણ ત્યાં જ વિરાજમાન હતા. અંતર્યામીપણે જાણે મારી મૂંઝવણનો ઊકેલ લાવવા-બળ પમાડવા તેમણે મને બોલાવ્યો. ત્યારે પ.પૂ. કાકાજી જમતા હતા. જમતા-જમતા આશીર્વાદરૂપે એક-બે સૂચન કર્યા. પછી પોતાના થાળમાંથી પ્રસાદીરૂપે દૂધનો વાડકો આપ્યો અને બોલ્યા– *'અહીંયા જ પી જાવ.'* હું પી જાઊં તે પહેલા જ, સામે પૂ. બાપુ ઊભા હતા, તેમને કહ્યું– *આને મારા પાકિટમાંથી ૧૦૦ રૂપિયા આપો.* પૂ. અરૂણભાઈએ મને સો રૂપિયા આપ્યા. હું પ.પૂ. ગુરૂજી પાસે આવ્યો. એમણે મને પુછ્યું– *શું થયું ?* જે વાત હતી, તે મેં બતાવી. પછી એમણે મને પુછ્યું– *'તારે શું કરવું છે ?'* તો મેં કહ્યું : *મારે ઘરે નથી રહેવું; મારે તમારી પાસે જ રહેવું છે.*

પ.પૂ. ગુરૂજી અને સંતો-હરિભક્તોની દિલ્હી આવવાની ટિકિટ તા. ૫મીની હતી. તેથી નાપા–પ.પૂ. કાંતિકાકાના ફાર્મ પરથી અમે રાતે જ હરિધામ મંદિરે આવ્યા. હું પ.પૂ. ગુરૂજીની સેવામાં હતો. સવારનો નાસ્તો કરી પ.પૂ. ગુરૂજી-સંતો સાથે પ.પૂ. કોઠારીસ્વામીની રૂમમાં બેઠા હતા. ત્યારે પૂર્વાશ્રમના મારા પિતાશ્રી અંદર આવ્યા. થોડી વાર પછી બોલ્યા– *હું આને ઘરે લઈ જવા માટે આવ્યો છું.* મેં ઘણી બધી આનાકાની કરી, પણ મને ઘરે લઈ ગયા. હરિધામથી ઘર સુધી અંતરમાં ભજન થયા કર્યું અને એક જ વિચાર કે મારે ઘરે નથી રહેવું. એમને ય લાગ્યું કે એ ઘરે નહીં રહે. તેથી મને ઘરમાં પૂરી, બહાર દરવાજે તાળુ મારી દીધું. ઘણું બધું ખટખટાવ્યું, પણ ન ખોલ્યું. જમવાનું પુછ્યું, પણ મેં ના પાડી. ત્રણ-ચાર કલાક થયા ત્યાં ભગવાન પ્રગટ હોય ને જાણે પ.પૂ. કાકાજી મારી સાથે જ હોય, તેમ મનમાં એક વિચાર આવ્યો કે તું ઘરમાં કહે–

'પ.પૂ. ગુરૂજી જાય છે, તો મને છેલ્લી વાર મળવા માટે જવા દો. જોઈએ તો મારી સાથે બે જણને મોકલો.'

ઘરમાં બધાંને એ વાત સાચી લાગી. કલાક પછી મને બે જણની સાથે પ.પૂ. ગુરૂજીને મળવા માટે સાઈકલ પર બેસાડી હરિધામ લઈ આવ્યા. રસ્તામાં ભજન ચાલતું હતું અને એક જ વિચાર કે કેમ કરી અહીંયાંથી જતા રહેવું. આ વિચારમાં હું હરિધામ પહોંચ્યો. પ.પૂ. ગુરૂજીને મળવા માટે હું પ.પૂ. શાસ્ત્રીસ્વામીની રૂમમાં ગયો. ત્યાં પ.પૂ. ગુરૂજી આરામ કરતા હતા. મારી સાથે બે જણ આવ્યા હતા તેમને ત્યાં બેસાડી, હું પ.પૂ. શાસ્ત્રીસ્વામીને બોલાવી લાવું કરી, જૂના 'અનિર્દેશ'ની પાછળથી કોઈ ન જુવે તે પ્રમાણે નીકળી ગયો ને વડોદરા આવી સાંજની ટ્રેનમાં પ.પૂ. ગુરૂજી જે ટ્રેનમાં હતાં તેમાં જ બેસી તા. ૬ઠ્ઠીના દિલ્હી આવી ગયો.

'જીવનો સ્વભાવ છે દુ:ખી થવાનો અને સંતનો સ્વભાવ છે જીવને સુખી કરવાનો.' જીવ જગતની વિષયવાસનામાં ના ફંસાય, તે હેતુથી જીવની ગોવાળી કરતા હોય તેમ પ.પૂ. ગુરૂજી ઘણી વાતો કરતા. બે એક મહીના થયા હશે ને પ.પૂ. ગુરૂજીએ ફરી મને કડક થઈને પુછ્યું–

'તું સાધુ થઈશ ? હું તને છેલ્લી વાર કહું છું. તને કાંઈ પણ મૂંઝવણ હોય તો તું ભજન કર. રોજ સવા કલાકની ધુન ચાલે છે તેમાં તું બરાબર ભજન કર. પાંચ-છઃ દિવસ પછી ગુરૂપૂર્ણિમા આવે છે, ત્યાં

સુધી તું બરાબર ભજન કર. ***મહારાજ તને પ્રતીતિ કરાવશે.'***

ગુરૂપૂનમના બે-ત્રણ દિવસ પહેલાં બ્હાર ચોકમાં (એ-૧૦૩માં) ધુન કરતો હતો. આજુબાજુ પાંચ-છ સેવકો ને હરિભક્તો ધુનમાં બેઠા હતા. મારે મન એક જ સંકલ્પ હતો કે મહારાજ મને કાંઈ સૂઝાડો. એવા વિચારમાં ને વિચારમાં પંદર-વીશ મિનિટ થઈ હશે ને ત્યાં બાપા (યોગીજી મહારાજ)ના દર્શન થયા અને મારો જીવ શરીરથી અલગ થઈ ગયો હોય તેમ મને લાગ્યું. દર્શનમાં મને બાપાએ કહ્યું–

'તું સાધુ થા, હું તને મારા જેવો સાધુ બનાવીશ.'

મેં 'હા' પાડી. તે પછી બાપાએ મને પકડી ધબ્બા માર્યા. **બાપાની એ મૂર્તિનું દર્શન મારા જીવમાં આજીવન બેસી ગયું છે.**

આવી પ્રતીતિ થયા પછી પ.પૂ. ગુરૂજીએ ક્યારે ય મને સાધુ થવા પુછયું ન્હોતું. સાધુ બનાવવાની તારીખ પાકી થઈ તેના પાંચ દિવસ પહેલાં મને કહ્યું–*'આ તારીખે તને સાધુ બનાવીશું.* ***તા. ૧૨.૪.'૮૫ – પાર્ષદી દીક્ષા અને તા. ૧૩.૪.'૮૫ ભાગવતી દીક્ષા' !***

સાધુ થયે આજે ૨૫ વર્ષ થયા છે. ક્યારે ય પણ મૂંઝવણ આવી હોય, ત્યારે એ મૂર્તિને યાદ કરી ભજન કર્યું છે અને... મને શાંતિ શાંતિ થઈ જીવમાં ઠંડક-ઠંડક થઈ ગઈ છે.

હું સોખડામાં ઉછર્યો; ગામમાંથી બીજાં પણ સોખડા મંદિરે સાધુ થયા, પણ હું આમ દિલ્હી આવ્યો! આજે વિચારૂ છું તો લાગે કે–

પ.પૂ. ગુરૂજીના સંકલ્પે હું સાધુ થયો અને એમના બળે જ એમની અને હરિભક્તોની સેવા કરી શક્યો છું.

☆ ☆ ☆

૧૯૮૩માં માર્ચની ૨૮મીએ છત્તરપુર મંદિરેથી અશોકવિહાર મંદિરે હું પ.પૂ. ગુરૂજી પાસે રહેવા માટે આવી ગયો હતો. ત્રણ દિવસ થયા હશે અને સવારે પ.પૂ. ગુરૂજીને નાસ્તો કરાવવા માટે પાસે બેઠો હતો, ત્યારે સહજ જ પ.પૂ. ગુરૂજીએ પુછયું–*તું શું સેવા કરીશ ?* ત્યારે મેં કહ્યું–*હું રસોઈની સેવા કરીશ.* રસોઈ કરવી મારી રૂચિ હતી. થોડી ઘણી રસોઈ બનાવતા ય આવડતી હતી. રસોઈની સેવાનું સાંભળતા જ એમની પ્રસન્નતાની દૃષ્ટિ મારા ઉપર પડી. તેમણે મને બે સૂચન કર્યા–

* *'સ્વામિનારાયણ' ભજન કરતાં-કરતાં રસોઈ કરવી.*

પછી રસોડામાં આવીને કહ્યું–

* *હવે પૂ. રમેશભાઈને રસોઈ બનાવવા નહીં દેવી; ના આવડે તો તેમને પૂછી લેવું, પણ રસોઈ તો તારે જ બનાવવી.*

પ.પૂ. ગુરૂજીની સેવામાં દિવસો વીતતા ગયા. ક્યારેક રસોઈ બનાવવામાં ખબર ના પડે ને પૂ. રમેશભાઈ હાજર હોય ત્યારે હું તેમને પૂછતો. પૂ. રમેશભાઈ પણ સરસ રીતે બતાવતા; જ્યારે કંઈ સારું નહીં બન્યું હોય, ત્યારે મીઠી ટકોર કરતા કહેતા– *આમાં આ વસ્તુ નાખીશ તો સરસ થશે.* બીજે દિવસે તે વસ્તુને ધ્યાનમાં રાખીને બનાવતો ત્યારે–*'હવે સરસ થઈ...'* એમ તેમણે ઘણી

વખત કહેલું.

આપણા સંપ્રદાયમાં રસોડાની સેવા ખૂબ જ અગત્યની હોય છે. પ.પૂ. યોગીબાપા પણ રસોડાની સેવામાં વરસો સુધી રહ્યા. પ.પૂ. ગુરૂજીએ માર્ગદર્શન આપ્યું એ પ્રમાણે ભજન કરતાં-કરતાં આ સેવા કરવાથી મહારાજ ભળે અને બધાંને પ્રસાદ બહુ પસંદ પડે. એમના શ્રીચરણોમાં એજ પ્રાર્થના કે મને વધુ તો કંઈ આવડતુ નથી, પણ પ.પૂ. કાકાજી અને એમણે જે સંકલ્પ કરી મને આ ભગવા પહેરાવ્યા છે, તે એજ મને બળ આપી મંજિલ સુધી પ્હોંચાડે.

☆ ☆ ☆

પ.પૂ. ગુરૂજી ખૂબ જ લાગણીશીલ, મમતામય અને દયાળુ છે. કોઈનું દર્દ તેઓ જોઈ શકતા નથી. કોઈ હરિભક્તને સ્હેજ પણ દુઃખમાં જુએ, તો એમનો ચેહરો એકદમ ઢીલો પડી જાય. ૧૯૯૮ની સાલમાં પ.ભ. કૌશિકભાઈના નાના દીકરા ચિન્મયને રાતે પેટમાં ખૂબ દુઃખાવો ઊપડયો ને તાત્કાલિક સારવાર માટે, 'જયપુર ગોલ્ડન' હૉસ્પિટલ લઈ ગયા. ડૉક્ટરે નિદાન કર્યું કે ઍપન્ડીસાઈટીસ છે અને તરત ઑપરેશન કરવું પડશે.

મોડી રાત હોવા છતાં, પ.પૂ. ગુરૂજી મને જોડમાં લઈ તરત 'જયપુર ગોલ્ડન' હૉસ્પિટલ આવ્યા. ઑપરેશન થઈ ગયું ત્યાં સુધી એક કુટુંબીની જેમ રાતના બે વાગ્યા સુધી ત્યાં જ રોકાયા. એ દરમ્યાન, ત્યાં એક દર્દીને કોઈ સ્ટ્રેચર પર લાવ્યું. કોઈ ઝગડામાં એને ચાકૂ મારવામાં આવ્યું હતું અને ખૂબ લોહી વહી રહ્યું હતુ. એની દશા જોઈ પ.પૂ. ગુરૂજીના ચેહરા પર કરૂણા અને દયાના ભાવ આવી ગયા.

એ જોઈ, મને તરત વિચાર આવ્યો કે જેમ **મૂ.અ.મૂ. ગુણાતીતાનંદસ્વામીની નજરમાં આવી જવાથી મોર, પારધીના અનેક પ્રયત્નો છતાં આબાદ બચી ગયો, એમ આ દર્દી પણ હવે પ.પૂ. ગુરૂજીની નજરમાં આવ્યો છે, તો બચી જશે.**

એ દર્દી અને એના સગાં વ્હાલાં પ.પૂ. ગુરૂજીના આશિષ લઈને ગયા, પણ પછી એની તબિયત વિષે કોઈ માહિતી અમને મળી ન હતી.

ઘણાં વર્ષો પછી, એક વાર લાલકૂવા પાસે હું મંદિર માટે વાસણ ખરીદવા ગયો હતો. ત્યાં એક દુકાનદારે મને જોઈ કહ્યું કે એણે જયપુર ગોલ્ડન હૉસ્પિટલમાં સ્વામિનારાયણના સંતોના દર્શન કર્યા હતા. ત્યારે મને ખ્યાલ પડયો કે આ તો એજ દર્દી હતો અને પ.પૂ. ગુરૂજીની નજરમાં આવવાથી એ ખરેખર સાજો થઈ જ ગયો ! પછી, એ ભાઈ પણ આપણા મંદિરે આવ્યા અને ઠાકોરજીના દર્શન કર્યા.

☆ ☆ ☆

૧૯૯૯ના જુલાઈમાં એક વાર તબિયત નબળી હોવાને લીધે પ.પૂ. ગુરૂજી રાત્રે વ્હેલા આરામમાં જતા રહ્યા હતા. એવામાં ફોન આવ્યો કે **પ.ભ. અરવિંદ મહેતા શેઠ**ના જમાઈ પૂ. ગગન સેઠીને ગુંડાઓએ ગોળી મારી છે અને એમને ગંભીર હાલતમાં 'પૅન્ટામેડ' હૉસ્પિટલમાં દાખલ કર્યા છે.

પોતાની તબિયતને ભૂલી, પ.પૂ. ગુરૂજી તરત જ 'પૅન્ટામેડ' હૉસ્પિટલ રવાના થયા અને ત્યાં પ.ભ. અરવિંદજી અને એમના વેવાઈ પ.ભ. સેઠી સાહેબને ખૂબ ટેકો અને બળ આપ્યા. ત્યારે ચ

પ.પૂ. ગુરૂજીના ચેહરા પર લાગણી અને આર્દ્રતા સ્પષ્ટ દેખાતી હતી. એમણે ઠાકોરજી પર વિશ્વાસ રાખી બધાંને ભજન કરવાનું જ કહ્યું. પોતે પણ ભજન કર્યું. પૂ. ગગનજીનું બે વાર ઑપરેશન કરવું પડયું અને ધીમે ધીમે તે સાજા- નરવા થઈ ગયા.

પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને સમજાવતા ત્યારે કહેલું કે–

પૂ. ભાઈસ્વામી જ્યારે ઓચિંતા અક્ષરધામ સિધાર્યા, ત્યારે પ.ભ. અરવિંદ સેઠ આખો દિવસ મંદિર આપણી પડખે રહ્યા હતા. એટલે એમના કપરા સમયે આપણે એમની પડખે રહેવું અને ઠાકોરજીને પણ પ્રાર્થના કરવી એ આપણી 'સેવા' કહેવાય. **સત્પુરૂષની પ્રાર્થના તો પ્રભુ માન્ય રાખે જ છે–એ અનુભવ્યું.**

☆ ☆ ☆

મને ડાયાબીટીસ નીકળ્યો ત્યારે શરૂ શરૂમાં શુગર ખૂબ જ વધેલી રહે. ડૉક્ટરે ઇન્સ્યુલિનના ઇન્જેક્શન શરૂ કરાવી દીધાં. પણ તોય શુગર કન્ટ્રોલમાં ન આવે. મેં જોયું કે મારી આ બીમારીથી પ.પૂ. ગુરૂજીને પણ મારા માટે ચિંતા અને લાગણી હતી.

એક વાર પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને ઇન્જેક્શન લેતો જોઈ કહ્યું કે–

આપણે હવે બહુ ઇંજેક્શન નથી લેવા. ધીમે ધીમે દવા પર આવી જવું છે.

અને... પછી બન્યું પણ એવું કે થોડા વખતમાં શુગર કંટ્રોલમાં આવી ગઈ ને ઇન્જેક્શન બંધ થયાં. હવે દવાથી જ સારવાર ચાલે છે.

– પૂ. સુહૃદ્સ્વામી, દિલ્હી

[हिन्दी अनुवाद]

स्वामिश्रीजी

पूर्वाश्रम में दादाजी भादरण वाले पुरुषोत्तम भगवान को मानते थे। और तो और, हमारे घर के सामने ही '**स्वामिनारायण**' का मंदिर था। जब कभी वहाँ कोई उत्सव होता – जैसे जन्माष्टमी का त्यौहार, सावन का झूला उत्सव या अन्नकूट की आरती हो – ऐसे मौके पर दर्शन करने जाता था।

मुझे प.पू. गुरुजी के प्रथम दर्शन १९८१ की १२ अप्रैल को इसी मंदिर के एक उत्सव में हुए। तब **प.पू. गुरुजी प्रवचन कर रहे थे। पहली नज़र में ही मुझे उनके प्रति खिंचाव हो गया।**

फिर १९८१ की १३ मई को पहली बार संतों की सेवा के लिए मेरा दिल्ली आना हुआ। छत्तरपुर मंदिर में रहता था। पढ़ाई करनी और 'संतों की सेवा' – ये दोनों साथ-साथ करता। **प.पू. काकाजी** जब भी दिल्ली आते, तो जब तक छत्तरपुर मंदिर का सॅन्टर चलता रहा, तब तक एक रात रुकने के लिए छत्तरपुर जरुर आते। तब बड़े संतों और सेवकों की बातों में मैं अकसर सुनता –

'बड़े पुरुषों को मोहताज़ नहीं करना। खुद भले मोहताज़ होना पड़े, लेकिन बड़े पुरुषों को मोहताज़ करना नहीं और हम से वे जो कुछ करवाना चाहें, उसके लिए कभी ना नहीं करना।'

१९८३ की बात है, मार्च महीने में मैं अशोकविहार मंदिर में रहने के लिए आ गया। लगभग एक महीना हुआ होगा और सुबह ९:०० बजे के करीब मैं प.पू. गुरुजी को नाश्ता करवाने बैठा था। तब प.पू. गुरुजी ने मुझसे सहज ही पूछा – *'तू साधु होगा ?'* तो, मैंने तुरंत 'हाँ' भर दी। अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने

मुझसे रसोई में से कप लाने को कहा और कप में अपने हाथ से काढ़ा डाल कर मुझे प्रसाद रूप में दिया; अपने पास बिठा कर काढ़ा पिलाया। थोड़ी देर के बाद प.पू. गुरुजी ने घर के हालचाल के बारे में पूछा– *'घर में सब क्या करते हैं- कैसे हैं?'* मैंने सारी जानकारी दी, तब प.पू. गुरुजी बोले–महाराज सब अच्छा कर देंगे। तुझे भरोसा है न? यूँ दो बार पूछा। तो, मैंने 'हाँ' कर दी।

इस तरह प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में एक साल बीता और १९८४ में १३ मार्च को प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन आया।

प.पू. काकाजी दिल्ली मंदिर में विराजमान थे। सायं करीब ५ बजे का समय था। आस-पास संत एवं हरिभक्त–चाँदप्रकाशजी, चौधरी साहेब, पटेल साहेब वगैरह बैठे थे। तब प.पू. काकाजी ने चाँदी की कंठी पहनाते हुए मुझसे पूछा– *'तू साधु होगा?'* तब भी मैंने 'हाँ' कर दी। तब प.पू. काकाजी बोले– ***'भगवे कपड़े लेकर तो साधु होना है, लेकिन अंतर भी भगवा करना।'*** ऐसी भगवत् भावना वाले साधु की महिमा की खूब बातें करके ७:३० के प्लेन से प.पू. काकाजी मुंबई चले गए।

थोड़े दिन बीते होंगे और मुझे पता चला कि प.पू. स्वामिजी की स्वर्णजयंती के निमित्त १ से ४ मई तक प.पू. गुरुजी के साथ आणंद जाना है। कई सारे हरिभक्त भी साथ में थे। स्वर्णजयंती के उत्सव में जाने के आनंद के बजाय मुझे मन में परेशानी थी कि मुझे पकड़ कर घर ले जाएंगे तो?

१ से ४ तक उत्सव पूरा हुआ। शाम को सभी हरिभक्तों-संतों के साथ प.पू. कांतिकाका के फार्म पर 'नापा' जाना हुआ। प.पू. काकाजी भी वहीं विराजमान थे। अंतर्यामी रूप से मानो मेरी परेशानी का हल लाने-बल देने के लिए उन्होंने मुझे बुलाया। तब प.पू. काकाजी भोजन कर रहे थे। भोजन करते-करते आशीर्वाद के रूप में एक-दो सूचन किए। फिर अपनी थाली में से प्रसाद के रूप में दूध का कटोरा दिया और बोले–'यहीं पी जाओ।' मैं उसे पी जाऊँ कि इससे पहले ही उन्होंने सामने खड़े पू. बापू से कहा इसे मेरे पर्स में से १०० रुपये दो। पू. अरुणभाई ने मुझे सौ रुपये दिए। मैं प.पू. गुरुजी के पास आया। उन्होंने मुझसे पूछा– *क्या हुआ?* जो बात थी, वह मैंने बताई। तब उन्होंने मुझसे पूछा– *'तुझे क्या करना है?'* मैंने कहा– *मुझे घर में नहीं रहना; मुझे आपके पास ही रहना है।*

प.पू. गुरुजी और संतों-हरिभक्तों की दिल्ली आने की टिकिट दि. ५ मई की थी। सो, नापा–प.पू. कांतिकाका के फार्म से हम रात को ही हरिधाम मंदिर में आ गए। मैं प.पू. गुरुजी की सेवा में था। सुबह का नाश्ता करके प.पू. गुरुजी–संतों के साथ प.पू. कोठारीस्वामिजी के कमरे में बैठे थे। तब पूर्वाश्रम के मेरे पिताजी आए। थोड़ी देर के बाद बोले– *मैं इसे घर ले जाने के लिए आया हूँ।* मैंने बहुत आनाकानी की, लेकिन वे मुझे घर ले गए। हरिधाम से घर तक भीतर में भजन चलता रहा और एक ही विचार कि मुझे घर में नहीं रहना है। उन्हें भी लगा कि यह घर में नहीं रहेगा। सो, उन्होंने मुझे घर में बंद करके, बाहर दरवाजे पर ताला लगा दिया। मैंने बहुत खटखटाया, लेकिन खोला नहीं। भोजन के लिए पूछा, पर मैंने मना कर दी। तीन-चार घंटे हुए कि मुझे ऐसा लगा–जैसे वहाँ भगवान प्रगटे हों और मानो प.पू. काकाजी मेरे साथ ही हों। फिर मन में एक विचार आया कि तू घर में कह दे–

'प.पू. गुरुजी जा रहे हैं, तो मुझे आख़िरी बार मिलने के लिए जाने दो। चाहो तो मेरे साथ दो जनों को भेज दो।'

घर में सभी को यह बात सच्ची लगी। एक घंटे के बाद मुझे दो जनों के साथ प.पू. गुरुजी से मिलाने के लिए साइकिल पर बिठा कर हरिधाम ले जाया गया। रास्ते में भजन जारी ही था और एक ही विचार कि कैसे भी चकमा देकर यहाँ से मुझे भाग जाना है। इसी सोच में मैं हरिधाम पहुँचा। प.पू. गुरुजी से मिलने के लिए मैं प.पू. शास्त्रीस्वामी के कमरे में गया। वहाँ प.पू. गुरुजी विश्राम कर रहे थे। मेरे साथ आए दोनों जनों को वहीं बिठा कर, *'प.पू. शास्त्रीस्वामी को बुला लाऊँ'* – यूँ कह कर मैं पुराने 'अनिर्देश' के पीछे के रास्ते से – ताकि कोई मुझे देख नहीं पाए, यूँ चुपके से निकल कर वडोदरा आ गया और शाम को जिस ट्रेन में प.पू. गुरुजी जाने वाले थे, उसी में बैठ कर दि. ६ को दिल्ली आ गया।

'जीव का स्वभाव है दुःखी होने का और संत का स्वभाव है जीव को सुखी करना।' जीव जगत की विषयवासना में न फंसे, इस हेतु से जीव की परवरिश करते हुए प.पू. गुरुजी कई बातें करते। एक-दो महीने हुए होंगे और प.पू. गुरुजी ने दोबारा मुझे थोड़ा कड़े होकर पूछा–

'तू साधु होगा ? मैं तुझे आख़िरी बार कह रहा हूँ। तुझे कोई परेशानी हो, तो तू भजन कर। रोज सवा घंटे की धुन होती है, उसमें तू लगातार भजन कर। पाँच-छः दिन के बाद गुरुपूर्णिमा आ रही है, तब तक तू ठीक से भजन कर। ***महाराज तुझे प्रतीति करवाएंगे।'***

गुरुपूर्णिमा से दो-तीन दिन पहले बाहर चौक में (ए-१०३ में) धुन कर रहा था। आस-पास पाँच-छः सेवक और हरिभक्त धुन में बैठे थे। मेरे मन में एक ही संकल्प था कि महाराज मुझे कुछ सुझाएं। ऐसे ही विचारों में पंद्रह-बीस मिनिट हुए होंगे कि बापा (योगीजी महाराज) के दर्शन हुए और मेरा जीव शरीर से अलग हो गया हो, ऐसा मुझे लगा। दर्शन में मुझे बापा ने कहा–

'तू साधु हो जा, मैं तुझे अपने जैसा साधु बनाऊँगा।'

मैंने 'हाँ' कर दी। उसके बाद बापा ने मुझे पकड़ कर धब्बा मारा। **बापा का यह दर्शन मेरे जीव में हमेशा के लिए बैठ गया है।**

ऐसी प्रतीति होने के बाद प.पू. गुरुजी ने फिर कभी भी मुझसे साधु होने के बारे में नहीं पूछा। साधु बनने की तारीख निश्चित हुई, उसके पाँच दिन पहले मुझसे कहा– *'इस तारीख को तुझे साधु बनाएंगे।*
दि. १२. ४.'८५ – पार्षदी दीक्षा और १३.४.'८५ (वैशाखी) भागवती दीक्षा'!

साधु हुए आज २५ वर्ष पूरे हुए हैं। जब कभी भी कोई परेशानी आई हो, तो उस मूर्ति को याद करके जब भी भजन किया है, तो मेरे जीव में शांति-शांति होकर ठंडक-ठंडक हो गई है।

सोखड़ा में मैं पला-बढ़ा; गाँव में से अन्य भी सोखड़ा मंदिर में साधु हुए, लेकिन मैं यूँ दिल्ली आ गया! आज सोचता हूँ तो लगता है –

प.पू. गुरुजी के संकल्प से मैं साधु हुआ और उन्हीं के बल से उनकी और हरिभक्तों की सेवा कर सका हूँ।

☆ ☆ ☆

१९८३ की मार्च २८ को छत्तरपुर मंदिर से अशोकविहार मंदिर में मैं प.पू. गुरुजी के पास रहने के लिए आ गया था। तीन दिन हुए होंगे और सुबह प.पू. गुरुजी को नाश्ता करवाने के लिए उनके पास बैठा था। तब सहज ही प.पू. गुरुजी ने पूछा– *तू क्या सेवा करेगा ?* मैंने कहा– *'मैं रसोई की सेवा करूँगा।'* रसोई के काम में मेरी रुचि थी। थोड़ा बहुत भोजन बनाना आता भी था। रसोई की सेवा के बारे सुनते ही प्रसन्नताभरी उनकी

दृष्टि मुझ पर पड़ी। उन्होंने मुझे दो सूत्र दिए –

* *'स्वामिनारायण' भजन करते-करते रसोई बनाना।*

फिर रसोई में आकर कहा–

* *अब पू. रमेशभाई को रसोई करने नहीं देना; कुछ नहीं समझ आए तो उनसे पूछ लेना, लेकिन रसोई तो तुम ही करना।*

प.पू. गुरुजी की सेवा में दिन बीतते गए। रसोई बनाने में कभी कुछ सूझ नहीं पड़ती और... पू. रमेशभाई यदि हाज़िर होते, तो मैं उनसे पूछ लेता। पू. रमेशभाई भी खूब प्रेम से बताते। जब कुछ अच्छा नहीं बनता, तब मिठास से टोकते हुए कहते– *इसमें यह चीज डालोगे, तो अच्छा बनेगा।* दूसरे दिन उसे ध्यान में रख कर बनाता तब– *'अब अच्छा बना है...'* यूँ उन्होंने कई बार कहा।

हमारे संप्रदाय में रसोई की सेवा खूब ही महत्त्वपूर्ण होती है। प.पू. योगीबापा भी रसोई की सेवा में वर्षों तक रहे। प.पू. गुरुजी ने जो मार्गदर्शन किया, उसके मुताबिक भजन करते-करते यह सेवा करने से महाराज ही उसमें स्वाद डालते हैं और सभी को प्रसाद बहुत पसंद आता है। इनके श्रीचरणों में यही प्रार्थना कि मुझे ज्यादा तो कुछ आता नहीं, लेकिन प.पू. काकाजी और उन्होंने जो संकल्प करके मुझे ये भगवे (कपड़े) दिए हैं, वे ही मुझे बल देकर वहाँ तक पहुँचाएं।

☆ ☆ ☆

प.पू. गुरुजी बहुत ही संवेदनशील, ममतामय और दयालु हैं। किसी का दर्द वे देख नहीं सकते। किसी हरिभक्त को तनिक भी दुःख में देखें, तो उनका चेहरा एकदम ढीला पड़ जाता है। १९९८ की साल में प.भ. कौशिकभाई के छोटे बेटे चिन्मय को रात में पेट में तेज़ दर्द उठा, सो चिकित्सा के लिए तुरंत 'जयपुर गोल्डन' हॉस्पिटल में ले गए। डॉक्टर ने चॅकअप करके बताया कि एपन्डीसाईटीस है और तुरंत ऑपरेशन करना पड़ेगा।

देर रात होने के बावजूद, प.पू. गुरुजी मुझे जोड़ में लेकर तुरंत 'जयपुर गोल्डन' हॉस्पिटल गए। ऑपरेशन पूरा होने तक परिवार के सदस्य की भाँति रात के दो बजे तक वहीं रूके। इस दौरान, कोई वहाँ एक घायल को स्ट्रेचर पर लेकर आया। झगड़े में उसे किसी ने चाकू मारा था और खूब खून बह रहा था। उसकी हालत देख कर प.पू. गुरुजी के चेहरे पर करुणा और दया के भाव आ गए।

यह देख कर, मुझे तुरंत विचार आया कि मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी की कृपादृष्टि में आ जाने से जिस प्रकार शिकारी द्वारा कई निशाने दागने के बावजूद, मोर जिंदा बच गया, वैसे ही ये घायल पर भी अब प.पू. गुरुजी की कृपादृष्टि पड़ गई है, तो वह बच जाएगा।

वह घायल और उसके सगे-संबंधी प.पू. गुरुजी से आशिष लेकर गए, लेकिन फिर उसकी तबियत के बारे में कोई जानकारी हमें नहीं मिली थी।

कई सालों के बाद, एक बार लालकुएँ के पास मैं मंदिर के लिए बर्तन खरीदने गया था। वहाँ एक दुकानदार ने मुझे देख कर कहा कि उसने 'जयपुर गोल्डन' हॉस्पिटल में स्वामिनारायण के संतों के दर्शन किए थे। तब मुझे ख्याल पड़ा कि यह तो वही घायल था, जो प.पू. गुरुजी की कृपादृष्टि में आने से सच में स्वस्थ हो ही गया! फिर, वह भाई भी हमारे मंदिर आया और ठाकुरजी के दर्शन किए।

☆ ☆ ☆

१९९९ की जुलाई में एक बार तबियत ढीली होने के कारण प.पू. गुरुजी रात को जल्दी आराम में चले गए थे। इतने में फोन आया कि **प.भ. अरविंद महेता सेठ** के दामाद पू. गगन सेठी को गुंडों ने गोली मारी है और उसे गंभीर हालत में 'पॅन्टामेड' हॉस्पिटल में दाखिल किया गया है।

अपनी तबियत को भूल कर, प.पू. गुरुजी तुरंत 'पॅन्टामेड' हॉस्पिटल के लिए रवाना हुए और वहाँ प.भ. अरविंदजी और उनके समधी प.भ. सेठी साहेब को सांत्वना और बल दिया। उस समय भी प.पू. गुरुजी के चेहरे पर संवेदना और करुणा स्पष्ट दिखाई देती थी। ठाकुरजी पर विश्वास रख कर, उन सभी को भजन करने के लिए प.पू. गुरुजी ने कहा। खुद भी भजन किया। पू. गगनजी का दो बार ऑपरेशन करना पड़ा और धीरे-धीरे वे स्वस्थ हो गए।

प.पू. गुरुजी ने मुझे समझाते हुए तब कहा था–

पू. भाईस्वामी जब अचानक अक्षरधाम सिधारे, तब प.भ. अरविंद सेठ सारा दिन मंदिर में हमारे साथ खड़े रहे थे। सो, उनके विषम समय में हमारा उनके साथ खड़े रहना और ठाकुरजी से प्रार्थना भी करना – वह हमारी 'सेवा' कही जाए।

सत्पुरुष की प्रार्थना तो प्रभु को मान्य होती ही है – यह अनुभव हुआ।

☆ ☆ ☆

मुझे डायाबीटीस निकली। शुरुआत में शुगर बहुत ही बढ़ी हुई रहती। डॉक्टर ने इन्स्युलिन के इन्जेक्शन शुरु करवा दिए, लेकिन तब भी शुगर कन्ट्रोल में नहीं आती थी। मैंने देखा कि मेरी इस बीमारी से प.पू. गुरुजी को भी संवेदना से मेरी चिंता बनी रहती थी।

एक बार प.पू. गुरुजी ने मुझे इन्जेक्शन लेते हुए देखा, तो बोले –

हमें अब बहुत इन्जेक्शन्स नहीं लेने। धीरे-धीरे दवाई पर आ जाना है।

और... हुआ भी ऐसा ही। थोड़े ही समय में शुगर कंट्रोल में आ गई और इन्जेक्शन बन्द हो गए। अब दवाई से ही इलाज चलता है।

– पू. सुहृद्स्वामी, दिल्ली

Statement about ownership and other particulars about newspaper —
'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 15 March, 2010

सौरभ - ११

Jay Swaminarayan

Heartiest Congratulations to everybody on the auspicious occasion of Birthday of P.P. Guruji. I take this opportunity to thank the entire family at Aksharpurushottam Mandir for accepting new members and extending hospitality to all who come in the 'Sharan' of P.P. Guruji and P.P. Didi. We all are fortunate to be here in the care and backing of P.P. Guruji and P.P. Didi.

I am a newcomer and in not less than three years, a great bond and affection has developed with the whole family. P.P. Guruji, on my initial visits, had suggested to wish Didi everyday and it has been such a good message and advice that not a day goes... rather my works starts by wishing **'My Didi'** every morning. Every day each small detail I feel I should discuss with her.

My association with Param Pujya Guruji and Param Pujya Didi is very new, but it seems like now I have been associated with them ever since.

Every time I visit the temple it is a celebration for me since I am gifted with the most desired satisfaction and happiness. The visit to the temple is a rejuvenation of the ideas and blessings showered by P.P. Guruji and dear Didi whenever I had the opportunity of meeting them.

P.P. Guruji has the capacity and intellectual power to get all work done in his own humble way. In Sanskrit 'Guru' means one who is regarded as having great knowledge, wisdom and authority. It is 'GU + RU' where GU means 'darkness' and RU means 'Light'. As a principle for development of consciousness it leads humanity from darkness of ignorance to light of knowledge. In purest form 'Guru' is a Divine incarnation (saint), a person with supreme knowledge about God and all the creations. The above 'definitions' and meanings to my mind are most befitting and truly explain the qualities & feelings of our P.P. Guruji.

For all devotees at the temple P.P. Guruji has a special relationship, equation and an understanding beyond expectations. Believe it or not, the relationship of mine with Guruji became Father/ Daughter relationship, the privilege which I have in the **temple is** too sacred and its **a second home for me and a period of less then three years have given so much which words cannot express.**

On the New Year **Didi** sent a very loving following message to me and I wish to share it with everybody.

"Falling in love with the LORD is the 'greatest romance', searching HIM is the 'greatest adventure', finding HIM is the 'greatest achievement' and being with HIM, keeping 'Divyabhaav' is the 'greatest source of happiness'."

Let's enjoy this association likewise and pray for Good health of P.P. Guruji & P.P. Didi.

– Mrs. Savita Bhandari, Delhi

[हिन्दी अनुवाद]

जय स्वामिनारायण!

प.पू. गुरुजी के प्रागट्य दिन के पावन अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई! इस अवसर पर, मैं अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर के पूरे दिव्य परिवार को आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, जिन्होंने प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी की 'शरण' में आए नए मुक्तों को स्वीकार किया और उनकी आवभगत की है। हम सभी भाग्यशाली हैं कि हमें प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी की परवरिश और गोद मिली है।

मैं अभी नई ही जुड़ी हूँ, पर तीन वर्ष से भी कम समय में मेरा पूरे सत्संग परिवार से प्रेमभरा घनिष्ठ संबंध हो गया है। सत्संग में आने के शुरूआती दिनों में मुझे प.पू. गुरुजी ने सुझाव दिया था कि मैं दीदी को (फोन से) रोज 'जय स्वामिनारायण' करूँ। यह इतना अच्छा संदेश और परामर्श था कि अब एक भी दिन खाली नहीं जाता... बल्कि मेरे काम ही हर रोज सुबह **'मेरी दीदी'** से बात करने के बाद शुरू होते हैं। हर रोज मुझे लगता है कि मैं दीदी से दिनभर की छोटी से छोटी बात भी कर लूँ।

प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी से मेरा संबंध अभी नया ही है, पर मुझे लगता है कि मैं लंबे अरसे से उनसे जुड़ी हुई हूँ!

मैं जब भी मंदिर जाती हूँ, वह मेरे लिए एक उत्सव होता है, क्योंकि वहाँ मुझे हृदय की शांति और आनंद मिलता है। जब भी मैं मंदिर जाती हूँ, तो प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी द्वारा बरसाए गए आशीर्वाद, मेरे विचारों को मानो नवजीवन देते हैं।

प.पू. गुरुजी में ऐसी अद्भुत, विलक्षण बौद्धिक क्षमता है कि वे सारे काम अपने निजी विनम्र तरीके से करवा लेते हैं। संस्कृत में 'गुरु' का अर्थ है – वह व्यक्ति जिसमें ज्ञान, विवेक एवं पारमेश्वरी सत्ता का समन्वय है। यह – 'गु' + 'रु' के योग से बना है; जहाँ 'गु' का अर्थ है 'अंधकार' और 'रु' का अर्थ है 'प्रकाश'। चेतना के विकासक्रम में गुरु मानवजाति को अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। अपने विशुद्ध स्वरूप में, 'गुरु' मानवरूप में एक दिव्य अवतार हैं, जो सर्वज्ञ हैं तथा प्रभु एवं उसकी सम्पूर्ण सृष्टि से पूर्णरूपेण परिचित हैं। मैं मानती हूँ– प्रभु की उपरोक्त परिभाषा एवं अर्थ प.पू. गुरुजी में चरितार्थ है और उनके गुणों एवं भावनाओं को सही रूप में व्यक्त करते हैं।

मंदिर के सभी मुक्तों के साथ प.पू. गुरुजी का निरपेक्ष भाव से विशिष्ट संबंध है, समीकरण है, अन्डरस्टॅन्डींग है। मानो या न मानो, पर गुरुजी से मेरा पिता-पुत्री का संबंध है। मंदिर से मुझे मिला यह विशिष्ट अधिकार अति पवित्र है और **यह मंदिर मेरे लिए मेरा एक दूसरा घर है। सच, तीन साल से भी कम समय में मुझे इतना कुछ मिला है कि मैं शब्दों में उनका बयान नहीं कर सकती।**

नए वर्ष पर दीदी ने मुझे एक प्यारभरा निम्न संदेशा भेजा था, जो मैं आप सबके साथ बाँटना चाहती हूँ:

''प्रभु से प्रेम में बंधना 'सर्वोच्च प्यार' है, उसकी खोज सबसे बड़ा 'साहसिक कार्य' है, उसे पाना सबसे बड़ी 'उपलब्धि' है और उनके प्रति 'दिव्यभाव' रखते हुए जीना – 'आनंद का सबसे बड़ा स्रोत' है।''

आइए, ऐसे संबंध से हम जीवन का आनंद लें और प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के सदा स्वस्थ रहने की प्रार्थना करें।

– सौ. सविता भंडारीजी, दिल्ली

[ગુજરાતી તરજુમો] **જય સ્વામિનારાયણ !**

પ.પૂ. ગુરૂજીના પ્રાકટ્યપર્વે બધાંને હાર્દિક વધામણાં! આ અવસરે, હું અક્ષરપુરૂષોત્તમ મંદિરના સમગ્ર દિવ્ય પરિવારનો આભાર વ્યક્ત કરવા ઇચ્છુ છું, જેમણે પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. દીદીના 'શરણે' આવેલા નવા મુક્તોને સ્વીકાર્યા અને આવકાર્યા. અમે ખૂબ ભાગ્યશાળી છીએ કે અમોને પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. દીદીની ગોવાળી અને ખોળો મળ્યો.

હું હમણાં જ જોગમાં આવી છું, પણ આ ત્રણ વરસથી ય ઓછા સમયના ગાળામાં અહીંના આખા સત્સંગ સાથે મારો એક ઘનિષ્ઠ સંબંધ થઈ ગયો છે. શુરૂઆતના દિવસોમાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને સૂચન કરેલું કે હું દીદીને (ફોન પર) દરરોજ 'જય સ્વામિનારાયણ' કરૂં. આ સૂચન અને સલાહ એવી સરસ હતી, જેથી મારો એક પણ દિવસ ઠાલો જતો નથી... એટલું જ નહીં, મારાં કામ જ સવારે **'મારી દીદી'** સાથે વાત કર્યા પછી શરૂ થાય છે. રોજ મને એમ રહે કે હું દીદીને આખા દિવસની નાનામાં નાની વાત પણ કરી લઉં.

પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. દીદી સાથે મારો સંબંધ હજુ નવો જ છે, પણ મને એવું લાગ્યા કરે કે હું ઘણાં વખતથી એમના જોગમાં છું.

હું જ્યારે ય મંદિરે જાઉં, એ મારા માટે એક ઉત્સવ જ હોય છે, કારણ– ત્યાં મને હૈયાધારણ અને આનંદ મળે છે. જ્યારે ય મંદિરે જાઉં છું, ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. દીદીએ વરસાવેલા આશીર્વાદ મારા વિચારોને જાણે નવજીવન આપે છે.

પ.પૂ. ગુરૂજીમાં એવી અદ્‌ભુત, વિલક્ષણ બૌદ્ધિક ક્ષમતા છે, કે તેઓ બધાં કામ પોતાની આગવી વિનમ્રતાથી કરાવી લેતા હોય છે. સંસ્કૃતમાં 'ગુરૂ'નો અર્થ છે – એ વ્યક્તિ કે જેમાં જ્ઞાન, વિવેક અને પારમેશ્વરી સત્તાનો સમન્વય હોય. ગુરૂ શબ્દ –'ગુ' અને 'રૂ'ના યોગથી બન્યો છે. 'ગુ' અર્થાત્– અંધકાર અને 'રૂ' અર્થાત્–પ્રકાશ. ચેતનાના વિકાસક્રમમાં ગુરૂ માનવજાતિને અજ્ઞાનના અંધકારમાંથી જ્ઞાનરૂપી પ્રકાશમાં લઈ જાય છે. પોતાના વિશુદ્ધ સ્વરૂપમાં, 'ગુરૂ' માનવરૂપમાં એક દિવ્ય અવતાર છે, જે સર્વજ્ઞ છે અને પ્રભુ તેમજ એમની રચનાના સંપૂર્ણ જાણકાર છે. હું માનું છું, 'પ્રભુ' માટેની આ પરિભાષા અને અર્થ પ.પૂ. ગુરૂજીમાં ચરિતાર્થ છે અને એમના ગુણો ને ભાવનાને સાચા સ્વરૂપે વ્યક્ત કરે છે.

મંદિરના દરેક મુક્ત સાથે પ.પૂ. ગુરૂજીનો નિરપેક્ષભાવે વિશિષ્ટ સંબંધ છે, સમીકરણ છે– અન્ડરસ્ટૅન્ડીંગ છે. માનો કે ન માનો, પણ ગુરૂજી સાથે મારો પિતા-પુત્રીનો સંબંધ છે. મંદિરેથી મને મળેલો આ વિશિષ્ટ અધિકાર અતિ પવિત્ર છે અને **આ મંદિર મારા માટે મારૂં બીજું ઘર છે. ખરેખર, ત્રણ વરસથી પણ ઓછા ગાળામાં મને એટલું બધું મળ્યું છે કે હું શબ્દોમાં એને વ્યક્ત કરી શકતી નથી.**

નવા વર્ષે પ.પૂ. દીદીએ મને ખૂબ પ્રેમભીનો નિમ્ન સંદેશો મોકલ્યો'તો, જે હું સહુને જણાવવા માંગું છું :

''પ્રભુના પ્રેમપાશમાં બંધાવું 'સર્વોચ્ચ પ્રેમ' છે, એમની શોધ સહુથી મોટું 'સાહસ કાર્ય' છે, એમને પામવું સહુથી મોટી 'પ્રાપ્તિ' છે અને એમનામાં 'દિવ્યભાવ' રાખીને જીવવું– 'આનંદનો સહુથી મોટો સ્રોત' છે.''

આવો, આવા સંબંધે જીવી આપણે જીવનનો આનંદ માણીએ અને પ.પૂ. ગુરૂજી તેમજ પ.પૂ. દીદીના નિરામય સ્વાસ્થ્ય માટે પ્રાર્થના કરીએ.

– સૌ. સવિતા ભંડારી, દિલ્હી

भजन

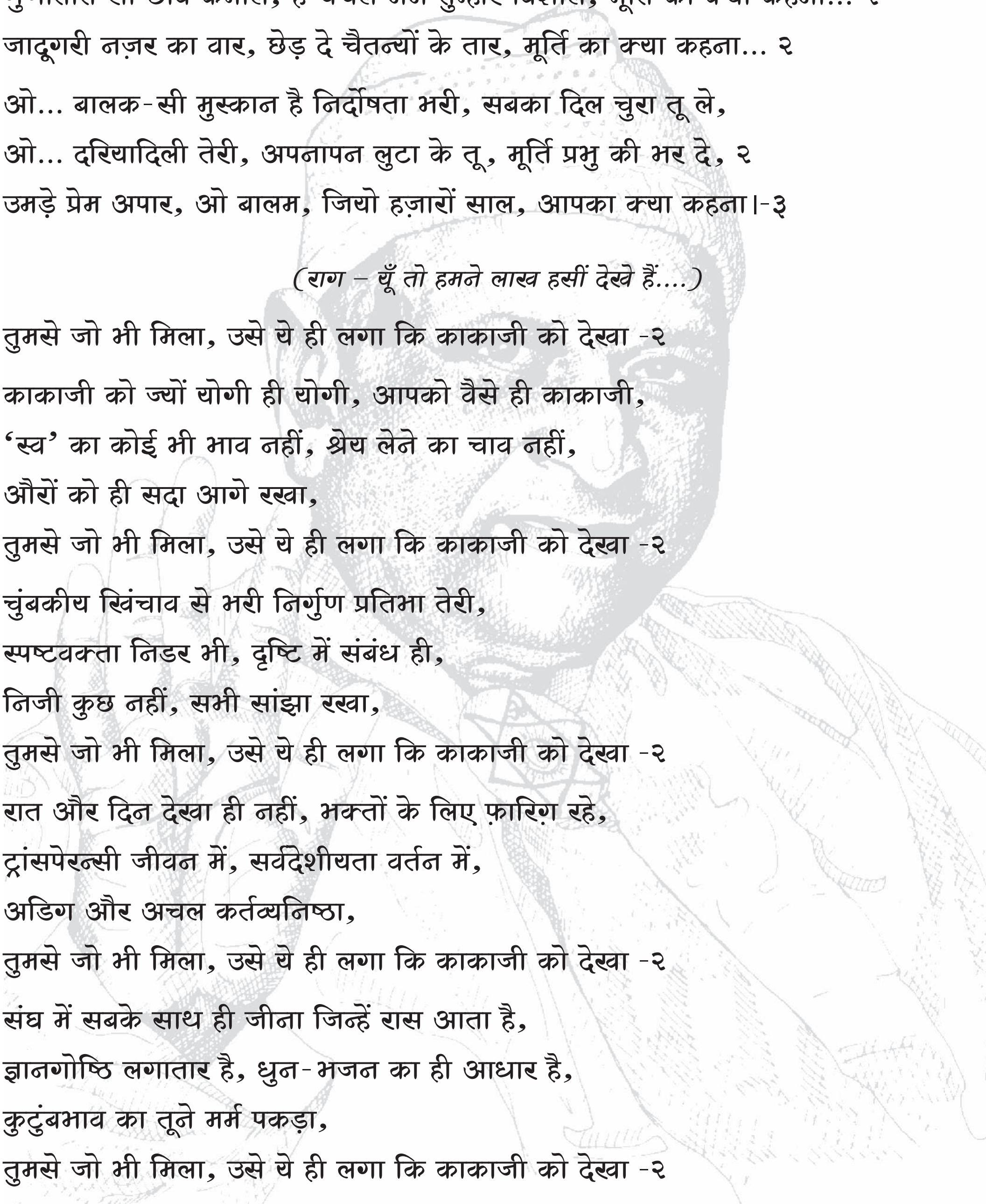

(राग – सिर पर टोपी लाल, हाथ में रेशम का रूमाल...)

गुणातीत सी छवि कमाल, हैं चंचल नैन तुम्हारे विशाल, मूर्ति का क्या कहना... २
जादूगरी नज़र का वार, छेड़ दे चैतन्यों के तार, मूर्ति का क्या कहना... २

ओ... बालक-सी मुस्कान है निर्दोषता भरी, सबका दिल चुरा तू ले,
ओ... दरियादिली तेरी, अपनापन लुटा के तू, मूर्ति प्रभु की भर दे, २
उमड़े प्रेम अपार, ओ बालम, जियो हज़ारों साल, आपका क्या कहना।-३

(राग – यूँ तो हमने लाख हसीं देखे हैं....)

तुमसे जो भी मिला, उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -२

काकाजी को ज्यों योगी ही योगी, आपको वैसे ही काकाजी,
'स्व' का कोई भी भाव नहीं, श्रेय लेने का चाव नहीं,
औरों को ही सदा आगे रखा,
तुमसे जो भी मिला, उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -२

चुंबकीय खिंचाव से भरी निर्गुण प्रतिभा तेरी,
स्पष्टवक्ता निडर भी, दृष्टि में संबंध ही,
निजी कुछ नहीं, सभी सांझा रखा,
तुमसे जो भी मिला, उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -२

रात और दिन देखा ही नहीं, भक्तों के लिए फ़ारिग़ रहे,
ट्रांसपेरन्सी जीवन में, सर्वदेशीयता वर्तन में,
अडिग और अचल कर्तव्यनिष्ठा,
तुमसे जो भी मिला, उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -२

संघ में सबके साथ ही जीना जिन्हें रास आता है,
ज्ञानगोष्ठि लगातार है, धुन-भजन का ही आधार है,
कुटुंबभाव का तूने मर्म पकड़ा,
तुमसे जो भी मिला, उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -२

उमड़े प्रेम अपार, ओ बालम, जियो हज़ारों साल, आपका क्या कहना।

***

❋ विज्ञप्ति ❋

मंदिर के हॉल के नवीनीकरण के चलते
अब की बार, मंदिर में मई-जून की
'अनुष्ठान शिबिर' नहीं होगी।
परंतु... प.पू. गुरुजी ने
सुबह 6:55 से 7:20 तक की 'फिक्स्ड टाईम धुन'
और
रात को सोने से पहले, 7 मिनिट की 'प्रायश्चित-रूप प्रार्थना'
करने की फिर से जो अलख जगाई है,
वह आप जहाँ हो वहाँ अचूक करें ही!

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	24.4.2010,शनिवार	—	एकादशी – व्रत
(2)	दि.	4.5.2010,मंगलवार	—	**प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
(3)	दि.	10.5.2010,सोमवार	—	एकादशी – व्रत
(4)	दि.	16.5.2010,रविवार	—	अखात्रीज
(5)	दि.	17.5.2010,सोमवार	—	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
(6)	दि.	24.5.2010,सोमवार	—	एकादशी – व्रत
(7)	दि.	26.5.2010,बुधवार	—	नृसिंह जयंती, फलारी व्रत

धुलेन्डी-चंदनोत्सव...

प.पू. काकाजी की पुष्पसमाधि पर ४८ घंटे की अखंड परिक्रमा...

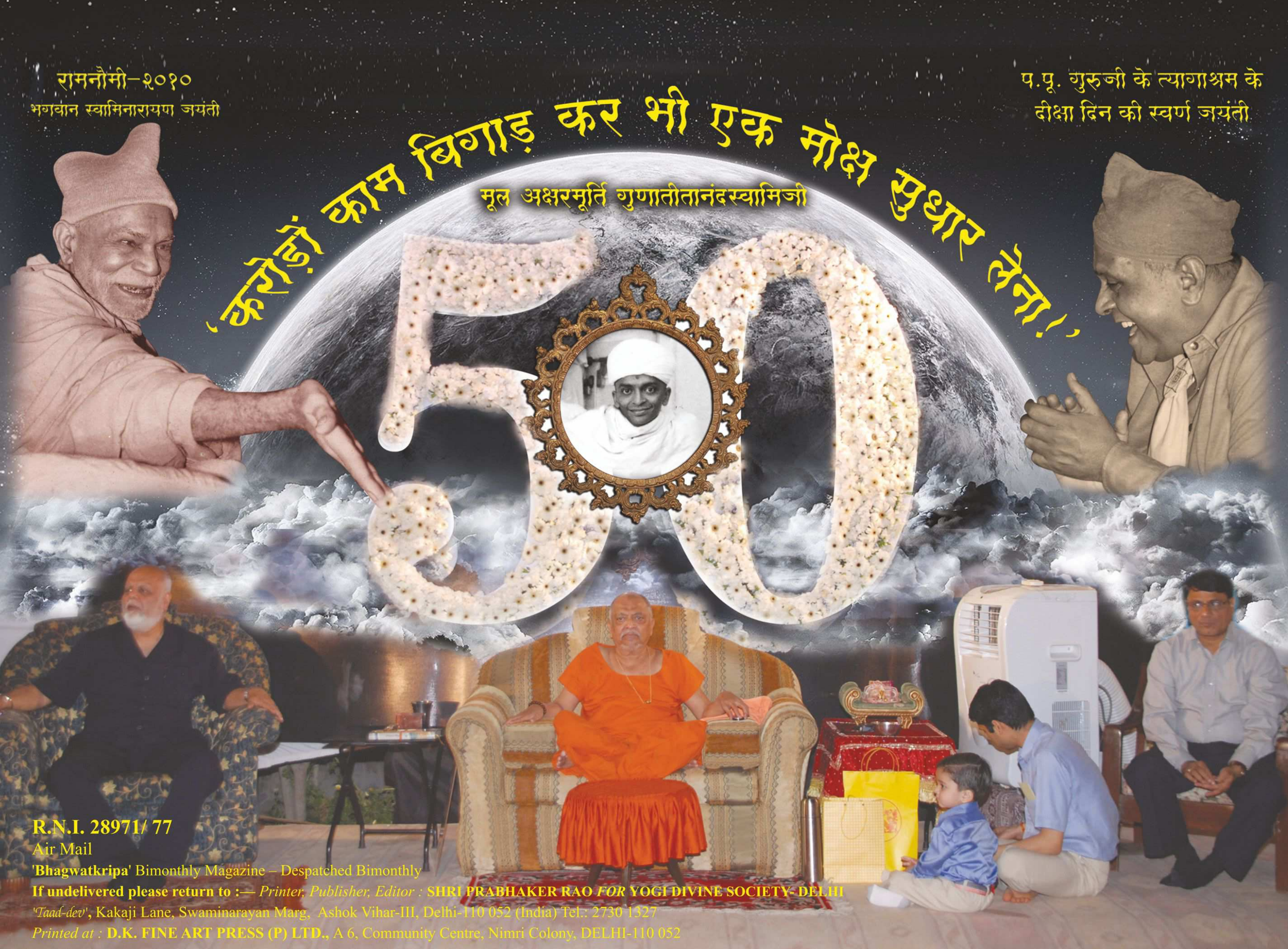

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.**, A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052